Issue-10/Vol-34/Sep. 2022 ISSN No. 2319 - 5908
An International Bilingual Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal

शोध संदर्श

शोध संदर्श

SHODH SANDARSH

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग; ति. मां. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

विषय - मैथिली महाकाव्यक परंपरा ओ विकास

द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 10 एवं 11 सितम्बर 2022

मैथिली विशेषांक

Chief Editor :
Prof. (Dr.) V.K. Pandey

Editor :
Prof. (Dr.) Shiv Prasad Yadav
Dr. V.K. Mishra
Dr. V.P. Tiwari

UGC Approved Peer Reviewed Journal
SCIENTIFIC JOURNAL IMPACT FACTOR SJIF No. 6.756

विविध ज्ञान - विज्ञान - विषय का मन्थन एवं विमर्श।
नव - उन्मेषी दशा - दिशा से भरा 'शोध - सन्दर्श' ॥

Scanned with OKEN Scanner

ISSUE-10 / Vol.-34 / Sep. 2022 ISSN NO. 2319-5908

An International Bilingual Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal

SHODH SANDARSH

शोध संदर्श

Education, Literature, History, Art, Culture, Science, Commerce etc.

Patron

Prof. (Dr.) A.P. Ojha
Head.
Deptt. of AIHC & Archaeology
Allahabad Central University, Prayagraj (UP)

Prof. R.P. Tripathi
Ex. Head.
Deptt. of AIHC Archaeology
Allahabad Central University, Prayagraj (UP)

Chief Editor

by Bilingual

Prof. (Dr.) Vimlesh Kumar Pandey
Professor
Ancient History, Culture and Archaeology
Saltanat Bahadur P.G. College, Badlapur, Jaunpur (UP)

Editors

Prof. Sushaim Bedi
Deptt. of Hindi
Colambia University USA

Dr. Vijay Pratap Tiwari
Mentor of SSIJ and Educationist,
Delhi, India

Dr. Vijay Kumar Mishra
Founder VP Print Media and Research Institute, Prayagraj (UP)

Prof. (Dr.) Shiv Prasad Yadav
Head Dept. of Maithili
T.M. Bhagalpur University,Bhagalpur

Prof.(Dr.) Pramod Kumar Pandey
Ex. Prof. & Head of Maithili
T.M. Bhagalpur University, Bhagalpur
Bihar

Dr. Pramod Kumar Singh
Dept. of Maithili
T.M. Bhagalpur University, Bhagalpur

Editorial Managerable Office

Vijay Pratap Tiwari

539-A, Bukhshi Khurd, Daraganj, Prayagraj (UP)-211006
Email : shodhsandarshalld@gmail.com
Website : www.shodhsandarsh.com
Mobile : 09415627149, 09450586526, 09015465436

Publisher & Printer

Vagisha Prakashan, Old Jhunsi, Kohna, Jhunsi, Prayagraj (UP)
Email : Vijaykumarmishra1976@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

[ISSN : 2319-5908]

Content

- मैथिली लोकनाट्यक विविध आयाम–*ध्रुव ज्योति कुमार सिंह* 1-3
- मैथिली महाकाव्यमे कृष्ण–*डॉ. नरेश कुमार* 4-8
- मैथिली महाकाव्यमे प्रकृति वर्णन–*डॉ. अमिताभ चक्रवर्ती* 9-16
- एकैसम सदीक उपन्यासमे दलित विमर्श–*डॉ. रीना कुमारी* 17-18
- आलोचकक दृष्टिमे मैथिलीक प्रसिद्ध कथा–*डॉ. स्वीटी कुमारी* 19-24
- सन्त लक्ष्मीनाथ गोसाँइक साहित्यमे अद्वैत दर्शन–*डॉ. अतुलेश्वर झा* 25-28
- 'लोरिक विजय' उपन्यासमे लोक संग्राम–*डॉ. जीवछ राम* 29-32
- मैथिली नाटक 'तालमुद्ठी' मे पात्र-योजना–*महेन्द्र मंडल* 33-34
- मैथिली महाकाव्यक निजता-बोध–*डॉ. वन्दना कुमारी* 35-40
- मैथिली कथाक शिल्प ओ शैली–*डॉ. विनीत कुमार लाल दास* 41-45
- मैथिली उपन्यासमे कथानक : एक दृष्टि–*देवेश झा* 46-48
- मैथिली साहित्यमे रमानन्द रेणुका योगदान–*विभा कुमारी* 49-51
- 'संवेदनाक टेमी' उपन्यासमे मानवीय संवेदनाक स्वर–*बाल्मीकि कुमार* 52-56
- साहित्यरथी : साहित्यक मणि–*अमित कुमार ठाकुर* 57-60
- मोहन भारद्वाजक आलोचनाक वैशिष्ट्य–*मो. नूरूद्दीन* 61-65
- डॉ. राजाराम प्रसादक मैथिली उपन्यास "शेष युद्ध" मे मानवीय संवेदना–*निखिल कुमार* 66-70
- 'हथकड़ी बाजि उठल' : एक दृष्टि–*काजल कुमारी* 71-74
- 'दू-पत्र' उपन्यासक तात्विक विवेचन–*प्रभाष कुमार* 75-77
- डॉ. अरविन्द 'अक्कू'क नाट्य-साहित्य–*प्रकाश कुमार चौधरी* 78-83
- जगदीश प्रसाद मण्डल जीक 'पंगु' उपन्यासक एक विश्लेषण–*राज कुमारी* 84-88
- मैथिली कथापर डॉ. रमानन्द झा 'रमण'क आलोचनात्मक दृष्टि–*डॉ. श्रवण कुमार* 89-93
- प्रवास पिआसल : दार्शनिक सत्य–*विद्या चन्द्र झा* 94-97
- राजकमल चौधरीक प्रयोगवादी दृष्टि–*राम सोगारथ यादव* 98-100
- मैथिली कथा साहित्यमे चित्रित नगरीय जीवनक यथार्थ–*केशव कुमार झा* 101-102
- मैथिली-कथा साहित्यमे पर्यावरणीय अभिव्यक्ति–*त्रिपुरारी कुमार झा* 103-104
- प्रदीप बिहारीक रचनाक भौगोलिक विस्तार–*रूपम कुमारी* 105-107
- चेतना समिति ओ नाट्यमंच 'क क्रमिक मूल्यांकन–*मुकेश कुमार* 108-110
- मैथिली साहित्यमे नारी चेतना–*संतोष कुमार झा* 111-113
- महाकाव्यमे नारी विमर्श–*श्वेता कुमारी* 114-120
- 'गुलो' उपन्यासमे जीवन-संघर्ष–*सुप्रिया कुमारी* 121-123
- राजकमल आ धूमकेतुक कथा साहित्यक वैशिष्ट्य–*अरुण कुमार ठाकुर* 124-126
- आधुनिक मैथिली साहित्यमे समीक्षा–*डॉ. अरुणा चौधरी* 127-129
- उषाकिरण खानक उपन्यासमे स्त्री पात्र–*मेघा झा* 130-134

* * * * *

Scanned with OKEN Scanner

(Ex. U.G.C. Approved Journal : 41329) Peer Reviewed Refereed Journal) ISSN No. - 2319–5908

Maithili : Shodh Sandarsh-X, Vol.-XXXIV, September, 2022, Page : 114-120

General Impact Factor : 1.7276, Scientific Journal Impact Factor : 6.756

महाकाव्यमे नारी विमर्श

*श्वेता कुमारी**

महाकाव्य एकटा एहन निजगुत विधा थिक जाहिमे देवता, कोनहु लोकनायक, वीर सेनानी अथवा कोनहु वर्चित व्यक्तित्वक सांगोपांग वर्णन पद्यक माध्यमसँ कएल गेल हो। पद्य छन्द युक्त भ' सकैत अछि। महाकाव्यक परम्परा ओनातँ अन्य साहित्य जगतमे पुरान अछिये, मैथिली साहित्यमे सेहो महाकाव्यक रचनाक परम्परा नव नहि अछि। प्रवृत्तिक आधारपर महाकाव्यकेँ दू वर्गमे विभाजित कएल जा सकैए–1 परम्परामूलक आ 2 नवतामूलक।

परम्परामूलक महाकाव्यमे रुढ़िवद्ध शास्त्रीय लक्ष्यकेँ पालन कएल जाइत अछि। एहन तरहक महाकाव्यक रचयितालोकनि महाकाव्य शास्त्र निर्दिष्ट लक्षण सभकेँ ध्यानमे राखि रचना कयलनि अछि। परम्परा मूलक महाकाव्यक रचनामे सर्वप्रथम रचनाकार लोकनि ओकर रूप निर्धारित करैत छथि, तखन सामग्रीक अनुसन्धान करैत छथि। रूपक अर्थ भेल हृष्ट पुष्ट काया । ओहन काया जे ने तँ कृशकाय हो आने रक्त–मांसक प्रचूरताक कारणे थुलथुल। जेना एकटा सुन्दर–सुडौल व्यक्तिक काया होइत अछि, महाकाव्यक रचनामे ओहने रूप–निर्माणक लक्ष्य राखल जइत अछि। मैथिली साहित्यमे एक–सँ–एक परम्परामूलक महाकाव्यक सेहो रचना भेल अछि।

नारी–विमर्श केन्द्रमे राखिक' सेहो महत्वपूर्ण रचनासभ भेल अछि। कविवर सीताराम झाक 'अम्बचरित' एकटा प्रसिद्ध महाकाव्य थिक जकर केन्द्रविन्दुमे जगतजननी सीता छथि। एहि महाकाव्यक माध्यमेँ कविवर एकटा नितान्त मौलिक विचारधारा प्रस्तुत कयलनि अछि। तहिना महाकाव्यक दोसर स्वरूप नवतामूलक मैथिली महाकाव्यक रचना सेहो योजनाबद्ध रूपेँ भेल अछि। नवतामूलक महाकाव्यमे आनुपातिक रूपमे परम्परागत रूप विधान पद्धतिक उपयोग अव्यल्प तथा पाश्चात्य रचना पद्धति संग आधुनिक भाषेतर आदर्श महाकाव्य सभक रचना–पद्धतिक उपयोग विशेष लेल गेल हो, रचनाकार लोकनि ओहिमे नवीन प्रयोग कयने छथि। अतुकान्त एवं मुक्त छन्दकेँ प्रश्रय देने छथि आ विषय एवं प्रसंगानुकुल वर्णन विस्तार कयने छथि तथा मूर्त्त घटनाक अपेक्षा अमूर्त्त घटना अर्थात कल्पित पायः प्रसंगकेँ विश्लेषण करैत एकटा नव दृष्टिकोणक परिचय देने छथि। विद्वानलोकौन एहन तरहक महाकाव्यकेँ ओहन तरहक एकटा कलमी गाछ मानैत छथि जकर जड़ि भारतीय आ फुनगी आन–आन संस्कृतिकेँ दर्शाबैत अछि। महाकाव्यक रचनाक फलक विस्तृत अछि। विषयक वैविध्य अछि। मैथिली साहित्यमे अनेको एहन महाकाव्य अछि, जहिमे कवि नारीक शक्ति, आचरण आ महिमाक व्याख्यान कयलनि अछि। ओना तँ शक्तिक उपासना, भारतीय जीवन पद्धतिक विशिष्ट अंग रहल अछि। समस्त भारतीय वांगमयमे पुस्कल शक्ति पदक रचना भारतीय मानसक 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता;'क साहित्यिक अभिव्यंजना थिक। नारी कोमल भावना ओ मातृत्व, सहनशीलता ओ दायित्व, सर्जकता ओ पालन, निरीक्षण लालन प्रवृति, दयालुता ओ सेवाभाव, करुणा मृदुलता, वात्सलय ओ सौन्दर्य मातृस्वरूपमे समेकित रूपेँ पावोल जाइत अछि।

परवर्ती पौराणिक साहित्य सभमे पराशक्तिक स्वरूपक बहुआयामी चित्रण भेल अछि। कतहु ई आद्यशक्तिक रूपमे चित्रित भेल अछि तँ कतहु विष्णुक महामायाक स्वरूपमे। ब्रह्मवैवर्त पुरानमे एहि आद्यशक्तिकेँ प्रकृतिक नामे अभिहित कयल गेल अछि जे इहत सृष्टिक आदिमे दू भागमे विभाजित भ' पुरुश आ नारीक सृष्टि कयलनि–

"सृष्टेद्या च या देवी प्रकृतिः सा प्रकीयतेताः।
योगेनात्मा सृष्टिविधौ द्विधारूपा वभूवसः
पुमांश्च दक्षिणाद्धांगो वामांगः प्रकृतिः स्मृतः।।"[1]

मैथिली साहित्यमे आदिशक्तिक रूपमे सदासँ नारी व्याख्यायित होइत रहलीह अछि। एहि सन्दर्भमे डॉ. योगानन्द झाक कथन छनि, "मैथिली साहित्यमे दुर्गा, काली, चण्डी, तारा, भुवनेश्वरी, कमला, भगवती, कालाभुखी,

* शोध छात्रा, मैथिली विभाग, पूर्निया विश्वविद्यालय, पूर्निया

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

शाकम्भरी, शीतला, सरस्वती, षोडसी, छिन्नमस्ता सती आदि विविध नामसँ देवी ओ शक्तिस्वरूपाक आवाहन होइत रहल अछि। नारी शक्ति एहि तरहक अभ्यर्थना विद्यापतिसँ आरम्भक आधुनिक कालधरिक कवि–नाटककार लोकनि करैत रहलाह अछि।"[2]

नारी शाक्तिक एहने विवेचना काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क 'राधा–विरह' मे देखल जा सकैत अछि । मधुप जीक एहि पद्यकेँ देखल जाय–

"सहस नयन भुज–मुखयुत तैं देविक लग वनिता बनिसुरवृन्द।
ऋषि–मुनि सहित नाम जपि–जपि से पिबइछ भक्तिक अमृत अमन्द।।
जनिक पाद–पंकज–नख. दर्पणमे विम्बित ब्रह्माण्ड अखण्ड।
स्मृति क "भुवनेश्वरी जानि आ अपना एक तनिक बुझि खण्ड।।"[3]

तहिना स्त्री शक्तिक विवेचना करैत आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' 'गंगातरंगिनी' मे कहैत छथि–"
शिव की सकितथि विष पचाय यदि लितथि न माथे।
जैतथि सिंधु सुखाय वाड़वानलहिक हाथे।।"[4]
महादेव द्वारा विषपान क' पचा लेबाक श्रेय आचार्य सुमनजी गंगाकेँ दैत छथि।

ओ प्रत्येक पुरुष द्वारा महत्वपूर्ण काज करबाक पाछाँ स्त्रीक. सहयोग आ सदिच्छाक बात करैत छथि। सुमन जी आगाँ कहैत छथि–

"की न ठिठुरि हिमबान मरणशय्यागत रहितथि।
यदि न अमर धुनि! अहाँक अग्रतरस भाग्यें पबितथि।
शत–शत ज्वालामुखी मुख जरि जैतिय भू दग्ध भय।
जँ न जड़बितन्हि सुधामयि! अहाँक सुधाधिक विमल पय।।"[5]

तहिना काशीकान्त मिश्र 'मधुप' सेहो 'राधा –विरह' मे लिखैत छथि–

"उमत असम्मत चिता भस्मसँ लिप्त जनिक सब आड़।
गर ल' गरल भूत गन सेव्य नगन फकइत भाड़।।
सखि ग्रीव भुज गहना भुजग जटामे नचइत गाड़।
शिव न कहवितथि, जौँ तुअ अंश उमाक न छुबितथि माड़।"[6]

एहि क्रममे बबुआजी झा 'अज्ञात' द्वारा रचित महाकाव्य 'प्रतिज्ञा पाण्डवक' चर्च करब सेहो आवश्यक अछि 'प्रतिज्ञा पाण्डव'केँ 2001 ई0 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त भेलैक एहिसँ पूर्व बबुआ जी झा 'अज्ञात 'एकटा प्रसिद्ध महाकाव्य 'रूक्मिणी परिणय' लिखिक' प्रसिद्धि क'लेने छलाह। अज्ञात जी अनेक रूपें' नारीक अवस्था आ परिस्थितिक उल्लेख कयने छथि। बबुआजी झा 'अज्ञात' क मानब छनि जे नारी उत्पीड़नेक कारण महाभारतक जन्म भेल तथापि आधुनिक समाजमे ई समस्या बनले अछि। दहेज ओ कन्यादान एहि दिशामे सर्वाधिक घिनौन समस्या बनिक' भारतीय राष्ट्रक हेतु चुनौती बनि गेल अछि। एहि समस्याक प्रति कविक संवेदनशील लेखनीक स्वर देखल जाए–

"नारी शीलहरणपर जाहिँ तहिँ उतरल मनुज घिनौना
प्राण हरणपर उतरल नारिक व्यहि चाहि धन सोना
उत्पीड़क लए तिलक मंगौए भौतुक अमित पछारी
नहि देलक तँ प्राण लैत अछि नारिक नर अविचारी"[7]

नारीक एहि दुरावस्थापर कविक सोच सामाजिक आक्रोशक रूपमे अभिव्यक्त भेलनि जे युगान्तकारी परिवर्तनक स्वर थिक–

"दया–धर्म सम्बन्ध औचितिक नहि किछु कतहु पुछारी
बापक दुख अवलोकि कनै छथि देशक आइ कुमारी
अपमानित भए रहल जेना छथि आइ धरापर नारी
[illegible] काल कोनो बड़ भारी।"[8]

शाकम्भरी, शीतला, सरस्वती, षोडसी, छिन्नमस्ता सती आदि विविध नामसँ देवी ओ शक्तिस्वरूपाक आवाहन होइत रहल अछि। नारी शक्ति एहि तरहक अभ्यर्थना विद्यापतिसँ आरम्भक' आधुनिक कालधरिक कवि–नाटककार लोकनि करैत रहलाह अछि।"[2]

नारी शाक्तिक एहने विवेचना काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क 'राधा–विरह' मे देखल जा सकैत अछि । मधुप जीक एहि पद्यकेँ देखल जाय–

"सहस नयन भुज–मुखयुत तेँ देविक लग वनिता बनिसुरवन्द।
ऋषि–मुनि सहित नाम जपि–जपि से पिबइछ भक्तिक अमृत अमन्द।।
जनिक पाद–पंकज–नख. दर्पणमे विम्बित ब्रह्माण्ड अखण्ड।
स्मृति क 'भुवनेश्वरी जानि आ अपना एक तनिक बुझि खण्ड।।"[3]

तहिना स्त्री शक्तिक विवेचना करैत आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' 'गंगातरंगिनी' मे कहैत छथि–"

शिव की सकितथि विष पचाय यदि लितथि न माथे।
जैतथि सिंधु सुखाय वाड़वानलहिक हाथे।।"[4]

महादेव द्वारा विषपान क' पचा लेबाक श्रेय आचार्य सुमनजी गंगाकेँ दैत छथि।

ओ प्रत्येक पुरुष द्वारा महत्वपूर्ण काज करबाक पाछाँ स्त्रीक. सहयोग आ सदिच्छाक बात करैत छथि। सुमन जी आगाँ कहैत छथि–

"की न ठिठुरि हिमबान मरणशय्यागत रहितथि।
यदि न अमर धुनि! अहॉक अम्रतरस भाग्यें पबितथि।
शत–शत ज्वालामुखी मुख जरि जैतिय भू दग्ध भय।
जँ न जड़बितन्ह सुधामयि! अहाँक सुधाधिक विमल पय।।"[5]

तहिना काशीकान्त मिश्र 'मधुप' सेहो 'राधा –विरह' मे लिखैत छथि–

"उमत असम्मत चिता भस्मसँ लिप्त जनिक सब आड़।
गर ल' गरल भूत गन सेव्य नगन फकइत भाड़।।
सखि ग्रीव भुज गहना भुजग जटामे नचइत गाड़।
शिव न कहवितथि, जौं तुअ अंश उमाक न छुबितथि माड़।"[6]

एहि क्रममे बबुआजी झा 'अज्ञात' द्वारा रचित महाकाव्य 'प्रतिज्ञा पाण्डवक' चर्च करब सेहो आवश्यक अछि 'प्रतिज्ञा पाण्डव'केँ 2001 ई0 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त भेलैक एहिसँ पूर्व बबुआ जी झा 'अज्ञात 'एकटा प्रसिद्ध महाकाव्य 'रूक्मिणी परिणय' लिखिक' प्रसिद्धि क'लेने छलाह। अज्ञात जी अनेक रूपेँ' नारीक अवस्था आ परिस्थितिक उल्लेख कयने छथि। बबुआजी झा 'अज्ञात' क मानब छनि जे नारी उत्पीड़नेक कारण महाभारतक जन्म भेल तथापि आधुनिक समाजमे ई समस्या बनले अछि। दहेज ओ कन्यादान एहि दिशामे सर्वाधिक घिनौन समस्या बनिक' भारतीय राष्ट्रक हेतु चुनौती बनि गेल अछि। एहि समस्याक प्रति कविक संवेदनशील लेखनीक स्वर देखल जाए–

'नारी शीलहरणपर जाहिँ तहिँ उतरल मनुज घिनौना
प्राण हरणपर उतरल नारिक व्यहि चाहि धन सोना
उत्पीडक लए तिलक मंगौए भौतुक अमित पछारी
नहि देलक तँ प्राण लैत अछि नारिक नर अविचारी"[7]

नारीक एहि दुरावस्थापर कविक सोच सामाजिक आक्रोशक रूपमे अभिव्यक्त भेलनि जे युगान्तकारी परिवर्तनक स्वर थिक–

'दया–धर्म सम्बन्ध औचितिक नहि किछु कतहु पुछारी
बापक दुख अवलोकि कनै छथि देशक आइ कुमारी
अपमानित भए रहल जेना छथि आइ धरापर नारी
बुझौ पड़ै अछि आबि रहल छै काल कोनो बड़ भारी।"[8]

Scanned with OKEN Scanner

अज्ञात जीक मानब छनि जे नारी स्वतंत्रता आइ युगक माँग आ सामयिक अवधारणा थिक। एहि तथ्यकेँ प्रतिष्ठापित करैत कहैत छथि–

"नर नारिक सहयोग वस्तुतः सृष्टिक हेतु बनैए
तैं दुनूक अर्द्धांग कल्पना भारत भूमि करैए
वैवाहिक सम्बन्ध दम्पती संख्य भाव सम्पादक
कोनो कृतिमे भए सकैत अछि सहमतिये निष्पादक।"[9]

मैथिली साहित्यमे विभिन्न विधामे नारीक शिक्षा आ ओकर महत्तापर जोर देल गेल अछि। नारीक सशक्तिकरण नारीक शिक्षासँ सम्बन्धित जे एकटा हल्लुक अर्थ समाजमे व्याप्त अछि, तकरा सम्बन्धमे हरिमोहन झा बहुत ज्वलन्त प्रश्न 'द्विरागमन' उपन्यासमे उठौने छथि ओ कहैत छथि –

"हमरालोकनि गृहिणीक हेतु शिक्षाक अर्थ बझैत छी कर्त्तव्य शिक्षा। जे स्त्री अनुशासन महत्त्व बुझय, मर्यादा पालनमे गौरव मानय, कर्त्तव्यक वेदीपर भोगलिप्साक बलिदान करय, वएह यथार्थतः शिक्षिता थिक। सीताजी अपन आदर्शपर सती भेलीह, तैं हम हुनकर पूजा करैत छियन्हि। ओ यदि लंकाक बाजब–नाचब सीखिक' अशोक वाटिकामे रहितथि तैं शूर्पनखासँ बेसी महत्त्व नहि पबितथि।"[10]

आधुनिक युगमे महिला सम्मानक एकटा वाह्य आडम्बरक प्रदर्शन करैत अनेको लोक, संघ–संस्था भेटे जायत। एही देखावटी समुदाय केँ लक्ष्य करैत प्रो. हरिमोहन झा कहैत छथि–"महिलाक यथार्थ सम्मान नकली शिष्टाचारसँ नहि होइत छैक। परपुरुषसँ कर मर्दनकेँ हम सभ्यताक चिन्ह नहि बल्कि असभ्यताक चिन्ह मानैत छी। स्त्रीक सहशिक्षा तथा स्वतंत्रताक आन्दोलनकेँ हम अधिकांशतः पुरुष उद्दाम लालसाक छद्मवेष मात्र बुझै छी।"[11]

हरिमोहन झा' ग्रजुऐट पुतोहु', 'मर्यादाक भंग, 'ग्राम सेविका', 'परिवर्त्तन', 'युगधर्म', 'सात रंगक देवी' आदि कथा तथा' रेलक झगड़ा' एकांकीमे मैथिल नारीक शिक्षिता होयबाक प्रति एहिठामक लोकजीवनमे जाहि स्पर्द्धाक अवलोकन करौने छथि, से ई सिद्ध करबामे समर्थ अछि जे ओ नारी शिक्षाक माध्यमे, नारी जागरणक माध्यमे, मिथिलाक सामाजिक सुधारक प्रबल समर्थक छलाह। कविवर सीताराम झाक महाकाव्यमे सेहो स्त्री चरितक गुणागान ओ पुष्टि भेल अछि। सीताराम झाक महाकाव्य 'अम्ब चरित' मे सुकन्याक लक्षणक वर्णन एहि प्रकारे भेल अछि–

"माइक बात सुनैत त्रास राखथि जे बापक
भाइ बहिन मे प्रीति, भीति राखथि जे पापक
सीखि नरिगुण होथि जाए पतिघर पुनि अन्या
तीरथि दुहु कुल अपना कीर्तिसँ विरल सुकन्या।" [12]

पं. जीवनाथ झा द्वारा रचित 'रावण वध' आध्यात्मिक कथानकपर आधारित महाकाव्य थिक। 'रावण वध' पोथीक प्रस्तावनाकेँ लिखैत काल कविशेखर बदरीनाथ झा महाकाव्यक अत्यन्त समीचीन परिभाषा प्रस्तुत कयलनि अछि। बदरीनाथ झा कहैत छथि–"एहि महाकाव्यमे धीरोदात्त नायक वीर रस, शृंगार, हास्य, करूण आदि रस अंग, नाटकीय पंचसमाधिक समाके संध्या, सूर्य, रजनी, प्रदोष, ध्वान्त, वासर प्रभृतिक संग वसन्त आदि छवो ऋतुक वर्णन, राजनीतिक विविध उपदेश एवं गुणीभूत व्यंग्य, विविधालंकार गुण एंव रीतिक योजना अलंकारिक शैलीमे स्पष्टतया पाओल जयबाक कारणेँ ई एकटा सफल लक्षणबद्ध महाकाव्य अछि।"[13]

'रावण वध' महाकाव्यक एहि अंशकेँ देखल जाए कोना कवि ऋतुक वर्णनक क्रममे शरद ऋतुक पुत्रीक रूपमे कल्पना कयलनि अछि –

"वर्षाक अभागलि पुत्री शरदक विचित्र दुख गाथा।
देखथि नहि अन्त त ततवय दुरनइत छनि सदिखन गाथा।"[14]

तहिना नारी वैशिष्ट्यक स्थापना हेतु वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' द्वारा रचित प्रशंसित महाकाव्य 'सीतायन' के अवश्य देखल जयबाक चाही। सीतायनक सन्दर्भमे दिनेश कुमार झाक कथन छनि, सीतााायन उनचास सर्गमे निबद्ध जगतजननी सीताक आविर्भाव ल' पाताल–प्रवेश धरिक सुश्रृंखलित, व्यवस्थित, गरिमामय कथानक समंन्वित, चरित्र–चित्रणक चारूतासँ युक्त, रसात्मकतासं ओतप्रोत, वैविध्यपुर्ण वर्णन वैभवसँ सम्पन्न, लोक कल्याणक अनुपम मंत्र सँ सिद्ध, जातीय भावना, आदर्श एवं सांस्कृतिक व्यंजक मैथिलीक एकटा अत्यन्त गौरवपूर्ण अन्वर्थक महाकाव्य अछि।"[15]

Scanned with OKEN Scanner

'सीतायन' महाकाव्यमे काव्यकारक प्रतिभा प्राकृतिक वर्णनमे खूब भकरार भ' परिलक्षित भेल अछि। देखल जाय हुं भाँति–

'सरवरमे सरसिज मध्य भ्रमर सामोद भ्रतिम,
नयनाभिराम जलखग बिहरए चहकए अगणित'।।
छिड़ि आबह पात पुरैनि ऊपर मोती जलकण,
कुमुदादि कमल केर पद्माकर धारण अभरण।।"[16]

मैथिली महाकाव्यमे एकटा नव परम्पराक प्रवेश तंत्रनाथ झा रचित महाकाव्य 'कीचक वध' क संग भेल अछि। 'कीचक वध' महाकाव्यक प्रसंग दिनेश कुमार झाक कथन छनि, 'एहि महाकाव्य नवीनता परिलक्षित होइछ चरित्र चित्रणक मनोवैज्ञानिक पद्धतिक प्रयोगमे, नारी हृदयक विवशतापुर्ण कातरताक हृदयाग्रही अंकनमे, वर्णनक ममत्व देखबाक स्थानपर भावनाक सुनियोजित विकासमे तथा अभिनव छन्द पद्धतिक प्रयोगमे।'[17]

विद्वान लोकनिक कहब छनि जे 'कीचक वध' महाकाव्यक रचनामे पाश्चात्य आ भारतीय दुनू पद्धतिक मणिकाचन संयोग अछि। 'कीचक वध' महाकाव्यमे द्रौपदीक चरित्र चित्रण वस्तुतः भारतीय कुल ललनाक आदर्श मूर्तिवान रूपेँ भेल अछि। ओकर एकटा बानगी देखल जाए–

क्षत्रिय पुत्रि वीर पत्नी कुल नारि
निर्भय भए हम जाछूल छी कीचक गेह।
जे विभु कौरव सभा मध्य मम लाज
राख, जे विभु कएलन्हि ओहि श्राण,
सिन्धु राजसैं से विभु निष्चय आज।"[18]

महाकाव्यकार दीननाथ पाठक 'बन्धु' जखन 'चाणक्य' महाकाव्य मे प्रकृति चित्रण करैत छथि तँ ओ अपन वर्णन–कौशलक अदभुत परिचय देने छथि–

"जलमे किरण, किरणमे लाली, लालीमे सौन्दर्य अपार,
सुखमे खग खगमे कल कलरव, मे मुद मोद प्रचार।
सरमे कमल, कमलपर मधुकर, मधुकर मे कलमद गुंजार,
तरूमे दल, दलपर कोकिल कुल, कोकिल कुल कलनाद उचार।"[19]

मैथिली साहित्यमे महाकाव्यक प्रचुरताक संग विषय वैविध्य सेहो देखबामे अबैत अछि। मतिनाथ मिश्रक महाकाव्य 'जय राजा सलहेस' मे मानवतावादी विचार–धाराक संपोषण भेल अछि। राजा सलहेस स्वयं कुशल योद्धा रहितहुँ अन्तरमे केहन बुद्धि–विवेक रखने छथि, से देखल जाए–

"दण्डेँ नहि मानवता जगइछ
युद्ध शौर्यमय धीक खेल।
प्रतिहिंसा जँ रहय अन्तधरि
तखन विजेता कोन भेल।।
मुख्य शौर्य तँ क्षमा थीक
जे बढ़ा परस्पर प्रेम दैछ।।
उपजाक, विश्वास भाव, हरि
हृदय सभटा पाप लैछ।।"[20]

एहि प्रसिद्ध महाकाव्य सभक संग–संग अन्यो किछु महाकाव्य सभक चर्च करब उचित अछि, जाहिमे नारीक उन्नयनक चर्चा ओ रेखांकन भेल अछि। एहन किछु महाकाव्यमे प्रमुख अछि–लक्ष्मण झा रचित 'गंगा' ओ शांतिदूत', रविन्द्रनाथ ठाकुर रचित 'नरगंगा', स्व0 रमाकान्त झा रचित 'व्यथा', रामचन्द्र मिश्र 'मधुकर' चैतन्य चन्द्रायण' आ लक्ष्मण झा शास्त्री रचित 'धर्मराज युधिष्ठिर'। एही क्रममे कवि चुड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क महाकाव्य विद्यापति' एवं आचार्य सुरेंन्द्र झा 'सुमन' रचित 'दत्तवती' सेहो प्रमुख स्थानपर विराजित अछि। सुरेन्द्र झा 'सुमन'

Scanned with OKEN Scanner

जीक रचना राष्ट्रीय सांस्कृतिक दृष्टिएँ अनुपम, प्रौढ़ कल्पना, सुष्ठु वर्णन एवं प्रवाहमय भाषाकेँ अपना अन्तरमे समाविष्ट कयने 'दत्तवती' एकटा स्थल अछि–

"राजनीति स्थ, शान्ति क्रान्ति दुहुचक्र।
खनहु सरल पथ कखनहु पुनि वक्र।।
सभा दाम केर जतय न हो गति लेश।
दण्ड विभेदक जतए उचित सुनिवेष।।"[21]

अहिना कवि चुड़ामणि 'मधुप'क विद्यापति' महाकाव्यमे कविक वर्णन कौशल देखि मुग्ध रहि जाए पड़ैत अछि। देखल जाए ई अंश–

"कविकुलगुरु केओ कालिदासकेँ कलाकार कहि देथु,
भावभूति भूषित भारवि कहि पत्रपात कए लेथु।
कहथु केओ कविता महिमामंडलमे छथि माधा महान
पदलालित्यक हेतु करथु केओ श्री हर्षक बखान।।
कवि कोकिलक सुनिकै किन्तु हमर ई कान।
आनक सुनत की पीबि बनिताघर के जल पीत अकान।।"[22]

महाकाव्यक मौलिक लेखनक संग–संग किछु अन्य भाषाक महाकाव्य अनूदित भ' क' सेहो मैथिलीमे आयल, जाहिमे स्त्रीक मनोदशा ओ ओकर पराशक्तिक अनेको सूत्र प्रदान कयलक। ओना तँ रचना कोनो भाषा अथवा विधाक हो, जँ सामाजिक सरोकार आ परिस्थितिक मूल्यांकन समग्रतामे कएल जायत तँ नारीक महत्ता स्वयं सिद्ध भ' जाइत अछि। जखन साहित्यमें नारी उत्थानक चर्चा होइत अछि तँ ओहिमे हरिमोहन झाक चर्चा सर्वप्रथम होइत अछि। हरिमोहन झा मिथिलामे नारी शिक्षाक दीपवर्तिकाकेँ केवल अपन लेखनीयेटासँ नहि अपितु अपना वास्तविक जीवनमे सेहो प्रज्ज्वलित कयने रहलाह। ओकर बातीकेँ उकसबैत रहलाह। हरिमोहन झा जीवनयात्रा मे कहने छथि, 'हम चाहैत छलहुँ जे पत्नीकेँ गृहिणी, सचिव, शिष्या, कार्येषु दासी शयनेषु रंभा सभ एक संग बनाक' रखियनि।. .. ओ स्थिर, गंभीर शांत प्रकृतिक छलीह, परन्तु तेजतर्रार चुस्त–चलाक चाहैत छलहुँ ओ तेहन मितभाषिणी छलीह जे कौखनकाल हम सहदेव मुनि' कहैत छलियनि। [23]

एकटा स्त्रीक भूमिका आ ओकर महत्वकेँ व्याख्यायित करैत प्रो. हरिमोहन झा आगाँ कहैत छथि, "लोक हुनक एहि गुणक प्रशंसा करैत छलखिन मुदा हमरा ओहन सत्ययुगी स्वभाव पसन्द नहि छल। 'लज्जा रूपेण संस्थिता देवीसँ 'शक्ति रूपेण संस्थिता' बेसी आकर्षक लगैत छलीह।"[24]

एहि तरहेँ कहल जा सकैछ जे अनेको महाकाव्यमे नारी–चेतनाक स्वर तत्व उत्कृष्टतया अभिव्यंजित भेल अछि। तथापि एहि प्रसंग आओर व्याख्याक बेगरता अछि। मिथिलाक लोकक जे कुत्सित प्रकृति आ प्रवृति अछि तकरा रेखांकित करैत प्रतिज्ञा पांडव महाकाव्यमे बबुआ जी झा 'अज्ञात' लिखलनि अछि से द्रष्टव्य–

"ककरो यदि उत्थान उदय श्रम देखै अछि
बहुतो जन सामान्य हृदयसँ हर्शित ह्यै अछि
मुदा तकर प्रतिकुल प्रायशः देखि पड़ै अछि
निकटक अपन देयाद द्वेशसँ कुहरि मरै अछि।"[25]

नारी जागरणक महत्व अनेको काव्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य वा गद्यमे भले कएल जाइत हो, मुदा कोनहुँ प्रकारक जागरण मात्र शिक्षासँ सम्भव अछि। एहि सम्बन्धमे बबुआ जी झा 'अज्ञात' अग्रचेती छलाह। ओ अपना महाकाव्यक एक अंशमे शिक्षाक महत्वपर बल देलनि अछि–

"शिक्षा अछि अनिवार्य कतहु नहि रहय अशिक्षित लोक।
अनुशासनसँ प्रेम अशेषक नहि संशय नहि शोक।।"[26]

किछु अनूदित मैथिली महाकाव्यमे प्रमुख अछि– अच्यूतानन्द दत्तक 'रघुवंश' गौरीशंकर झाक 'मेघनादबध', आ आचार्य रामलोचन शरणक मैथिली रामचरित मानस अच्यूतानन्द दत्तक रघुवंश महाकवि कालिदास रघुवंशम' क मैथिली अनुवाद अछि। गौरीशंकर झाक 'मेघनादबध' बंगला साहित्यक प्रसिद्ध कवि माइकेल मधुसूदन दत्त द्वारा

Scanned with OKEN Scanner

रचित प्रसिद्ध बंगला महाकाव्य 'मेघनादबधक' मैथिली रूपान्तर अछि। बंगला साहित्यमे एहि महाकाव्यकेँ साहित्यक कान्तिक रूपमे जानल जाइत अछि। तहिना आचार्य रामलोचन शरण तुलसीदासक 'रामचरित मानस'क मैथिलीमे अविकल अनुवाद कयने छथि। विद्वानलोकनिक कहब छनि जे एहि अनुवादमे मूलकविक आशय अनूवादमे कतहु आक्रान्त नहि भेल अछि। ओना मैथिली महाकाव्यक अनुवाद प्रक्रियापर अपन मत प्रकट करैत डॉ. दिनेश कुमार झा कहलनि अछि, 'महाकाव्य सम्पदाकेँ देखि क' कहल जा सकैत अछि जे अपना देश काल एवं जातिक सीमाकेँ टपि परावर्ती युग देश जाति संस्कृतिकेँ निरन्तर प्रेरणा प्रदान कयनिहार कालजयी महाकाव्य सभक प्रणयन हेतु मैथिली महाकाव्यकार लोकनिकेँ एखनो बहुत परिश्रम करबाक छनि।"[27]

महाकाव्यक स्थितिक प्रसंग डॉ. दिनेश कुमार झा आगाँ लिखैत छथि, "एक तँ अहिना ई युग संघर्ष प्रधान अछि। महाकाव्य पढ़बाक अवकाश कतेक लोककेँ छैक आ ताहूमे जँ पाठक मैथिली महाकाव्यकार लोकनिकेँ वर्तिते चर्वण करैत देखय, बाह्य एवं अन्तर्ज के परिप्लावित कयनिहार 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' क निर्मल मंगलमय मंदाकिनी प्रवाहित करैत नहि देखय, पार्थिव एवं पारलौकिक पथक परिमार्जन एवं परिशुद्धि करैत नहि देखय तँ कोना एहन स्थितिमे उत्साहक अनुभव कएल जा सकैत अछि।

मैथिली महाकाव्य मात्र नहि, मैथिली लेखकलोकनि वास्तविक जीवनमे सेहो स्त्रीक उत्थानक हेतु अनेक अवसरपर मुखर एवं प्रयत्नशील रहलाह अछि। वर्तमान कालमे मैथिली साहित्यमे महाकाव्यक लेखन बन्द जकाँ अछि। एकर कएकटा कारण भ' सकैत अछि जे महाकाव्यक काया कनेक विशाल रहबाक कारणेँ पाठक ओतेक समय नहि निकालि पबैत होथि। एहि तरहक चर्च अनेको विद्वानलोकनि करैत छथि, मुदा महाकाव्यक रचना होइत रहबाक चाही। साहित्यक एहि विधामे एकटा महानायक केँ सांगोपाँग देखबाक–बुझबाक एकटा निजगुत दृष्टि छैक।

यद्यपि मैथिली साहित्यमे महाकाव्यक रचनामे वर्ग–विभेद, छुआछूत, खाद्याखाद्य विवेचन इत्यादि तँ प्रचुरतासँ आयले अछि, नारी समस्यासँ संत्रस्त अशिक्षा ओ अज्ञानान्धकार तर कुहरैत, विषमताजन्य हीन भावनासँ ग्रस्त, आत्माभिमानसँ वंचित तथा दुनू साँझक दालियो–रोटी जुटा पयबामे असमर्थ मिथिलाक व्यापक समूह सेहो महाकाव्य सभमे विषयगत रूपेँ अबैत आ आत्माकेँ झकझोरैत रहल अछि। नारीक चीत्कार, आक्रोश आ संघर्ष मैथिली साहित्यमे निःसृत होइत रहल अछि। नारी जागरणक लेल महाकाव्यमे तँ विषय वस्तु प्रभावित करिते रहल किछु विशिष्ट लेखक सभ नारी जागरणक लेल विशेष रूपेँ शंखनाद करैत रहलाह। आ, एहि कड़ीमे वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क चर्च नहि करब साहित्यक संग न्याय नहि करब थिक। एहि सन्दर्भमे डॉ. योगानन्दझाक कहब छनि, "नारी जागरणक प्रति साकांक्ष यात्रीजी प्रेमक स्वरूपकेँ फ्रायडक मनोविश्लेषणवादक आधार द' 'पारो' उपन्यासक रचना कयलिन आ युवा चेतनाकेँ वृद्धविवाहक विरूद्ध 'नवतुरिया' उपन्यास ठाढ़ करौलनि। नारी शोषण केँ त्रासद स्थिति धरि पहुँचयबाक हेतु ओ एहन पात्रक सृष्टि करैत रहलाह जे अपन श्रमशक्तिक बलपर पुरुष वर्ग केर समानान्तर होयबाक लेल अकुलाइ छथि आ ओकर मनमानीक विरोध अबला बनिक' करय लगैत छथि।"[28]

एहने परिस्थितिक पुष्टि हेतु यात्रीजीक एहि पाँतीकेँ देखल जाय –

"खेपब हम चरखा काटि, मुदा
नहि जायब नैहर एहि बेर
ओहि साल जकाँकृ
काटब चरखा काटब टकुरी
हम खेपि लेब अप्पन कहुना।"[29]

सन्दर्भ–सूची

1. ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रकृति खण्ड, श्लोक–1
2. लोक, साहित्य ओ शब्द–सम्पदा, राधा विरह, शाक्तभाव, डॉ. योगानन्द झा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरिया, सराय, पृ. 77
3. राधा–विरह, काशीकान्त मिश्र 'भधुप', पृ. 76
4. अर्चना, सुरेन्द्र झा सुमन' मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा।
5. तत्रैव

Scanned with OKEN Scanner

6. राधा विरह, काशीकान्त, मिश्र 'मधुप', पृ. 76
7. प्रतिज्ञा पाण्डव, बबुआजी झा 'अज्ञात', पृ. 30
8. तत्रैव
9. तत्रैव
10. द्विरागमन, प्रो. हरिमोहन झा, पृ. 44
11. तत्रैव
12. अम्बचरित, सीताराम झा, पृ. 32
13. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, परम्परामूलक महाकाव्य, दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 211
14. रावणवध, जीवनाथ झा, पृ. 33
15. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, स्वतंत्रताकालीन मैथिली महाकाव्य, दिनेश कुमार झा मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 213
16. सीतायन, बैद्यनाथ मल्लिक 'विधु'
17. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, नवतामूलक मैथिली महाकाव्य, दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 215
18. कीचक वध, प्रो. तंत्रनाथ झा, पृ. 23
19. चाणक्य, दीनानाथ पाठक 'बन्धु', पृ. 16
20. जय राजा सलहेस, मतिनाथ मिश्र, पृ. 12
21. दत्तवती, सुरेन्द्र झा 'सुमन', पृ. 21
22. विद्यापति, कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मघुप', पृ. 34
23. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 221
24. तत्रैव
25. जीवन यात्रा, प्रो. हरिमोहन झा, मैथिली अकादमी, पृ. 55
26. तत्रैव
27. प्रतिज्ञा पाण्डव, बबुआ जी झा 'अज्ञात' पृ. 12
28. तत्रैव
29. लोक, साहित्य ओ शब्द–सम्पदा, डॉ. योगानन्द झा, पृ. 98

* * * * *

Scanned with OKEN Scanner

राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक:-16-17 फरवरी 2023

विषय:- "मैथिली अनुवाद साहित्य: दशा ओ दिशा"

स्मारिका

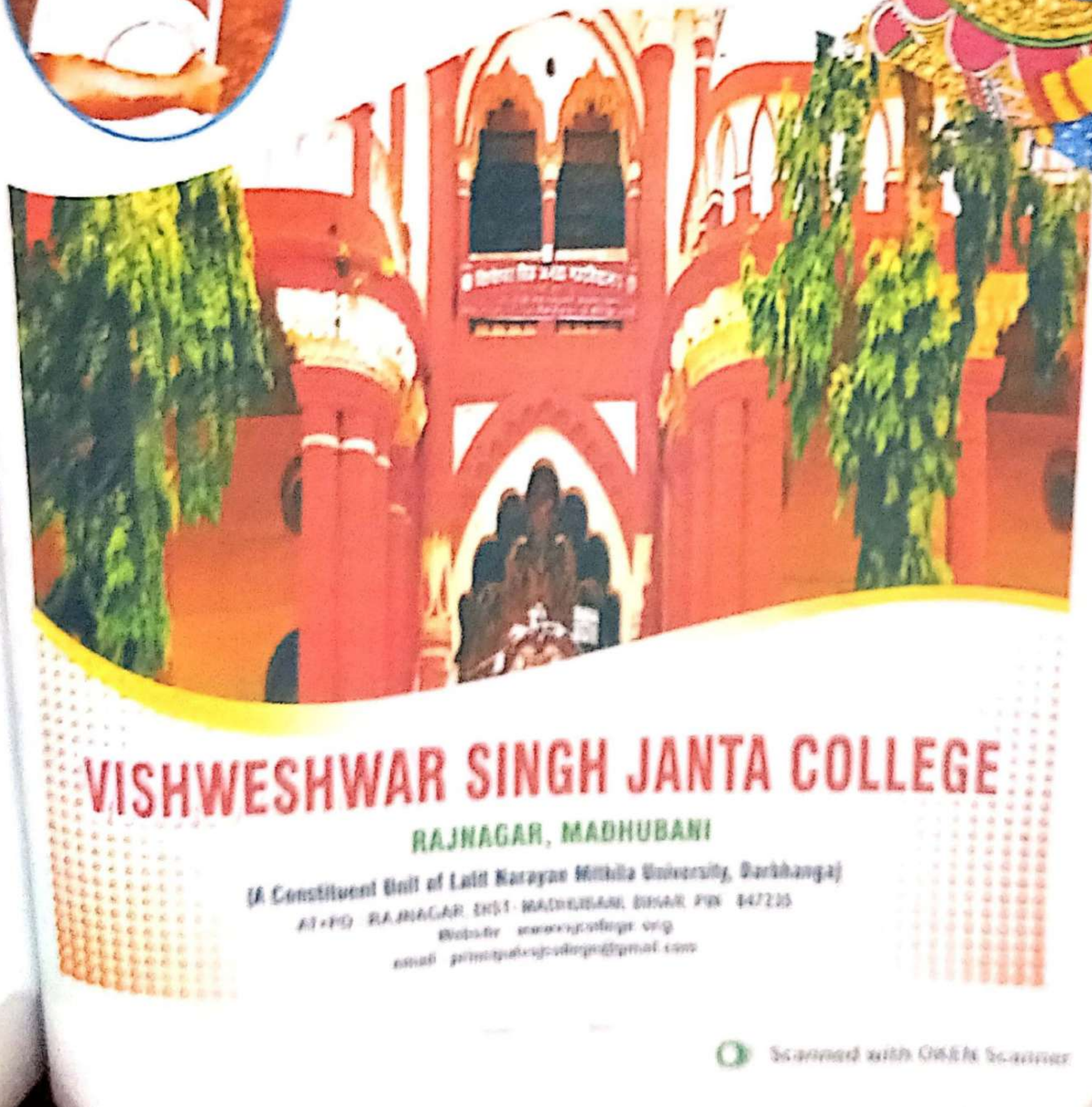

VISHWESHWAR SINGH JANTA COLLEGE

RAJNAGAR, MADHUBANI

(A Constituent Unit of Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga)

Scanned with OKEN Scanner

मलाहिनमे सामाजिक यथार्थक चित्रण

रंजना कुमारी

'मलाहिन' उपन्यासक अनुवादक श्री राम नारायण सिंह छथि। एहि उपन्यासकें 2014 मे साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कारसं पुरस्कृत कयल गेल छल। ई उपन्यास मलयालम भाषामे रचित प्रसिद्ध उपन्यास 'चेम्मीन 'क अनुवाद थिक। एकर मूल लेखक तकषी शिवशंकर पिल्लै छलाह। एहि उपन्यासक लोकप्रियता एहि बातसं लगाओल जा सकैत अछि जे ई पोथी एखन धरि विश्वक 19 भाषामे अनूदित भ' चुकल अछि, संगहि एहिपर आधारित 15 देशमे सिनेमाक निर्माण भ' चुकल अछि। मलाहिन अर्थात केरलक गरीब मलाह सभक जीवनपर आधारित उपन्यास थिक। ई उपन्यास ओहि समयमे लिखल गेल जाहि समयमे समाज साहूकारी, सामंतवादी आ जमींदारी कुव्यवस्थाक संग-संग अस्पृश्यता सन गंभीर अपंगतासं ग्रसित छल। समुद्र कात रहय बला मलाह सभक समाज एक टा बान्हल समाजक रूपमे जानल जाइत छल। ई समाज अपन पिछरल परंपरा, रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास आओर मान्यतासं एहि प्रकारें जकरल छल जे समाजक लोक, विशेष क' महिला लोकनिपर सभ प्रकारक प्रतिबन्ध लगौने छल।

मलाहिन एक टा रोमांटिक करुण रस प्रधान उपन्यास अछि। मुदा उपन्यासकार प्रेम कथाक बहन्ने मलाह समाजमे प्रचलित अंधविश्वास आ रीति-रेवाजेकें कथावस्तुक रूपमे प्रस्तुत क' एक टा साहसिक डेग उठौलानि। एहि उपन्यासमे मुख्य रूपसं मलाह समाजक तीन गोट महत्वपूर्ण कुमान्यताक उल्लेख कयल गेल अछि। पहिल, कोनो मलाहिनकें अपवित्र भेलापर समुद्र देवी ओकर मलाहक जीवनकें नष्ट क'दैत छलखिन। दोसर, बाल विवाहक प्रथा जे अधिकांश ग्रामीण गरीबक परिवारमे प्रचलित छल। आ तेसर, मात्र जालिया वर्गक लोककें(मलाह सभक एक टा समूह) नव नाव खरीदबाक अधिकार छल।

प्रस्तुत उपन्यास मात्र मलाहक समाजे टा नहि, अपितु सम्पूर्ण भारतीय समाजक अंधविश्वास,मान्यता आ घटैत मूल्यकें उजागर करैत अछि। कोनो व्यक्ति अपन समाजक रीति-नीतिक बन्हनसं एहन बन्हायल रहैत अछि जे चाहियो क' अपन लग-पासक दुश्चक्रसं मुक्त नहि भ' सकैत अछि, मलाहिन उपन्यासमे मनुष्यक एहि विवशताक करूण चित्रण कयल गेल अछि।

संक्षेपमे कहल जाय त' 'मलाहिन' मे जीवन दर्शनक स्पष्ट दृष्टिकोण आओर सहज मानवीय भावनाक अनुकूल दृश्य उपस्थित भेल अछि। श्री राम नारायण सिंह एहि पोथीक माध्यमसं एक टा कुशल अनुवादकक रूपमे समक्ष अयलाह अछि।

शोधार्थी,
मैथिली विभाग,
पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

Multidisciplinary International Seminar Proceedings

"Innovative Training, Learning, Evaluation and New Digitalise Research System in India: Opportunities and Challenges"(ITLEDRSI)

19th-20th August, 2023

Organised by

ICSRD

International Center for Scientific Research and Development (ICSRD) Bengaluru, Karnataka

(Regd. under Ministry of Corporate Affairs, Govt. of India)
(ISO 9001:2015 Certified Organisation)

Editor-in-Chief
Anischaibi

Editor
Mr. N. Kumar

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Contents

1. Innovative Digitalization in Areas of Home Science: Opportunities, Challenges 7
   Dr. Deepali Rao
2. Water Pollution: A Case Study of Chatjo River of Tirap District, Arunachal Pradesh 12
   Dr. Doli Tesia
3. Ecosophy: Gandhi-Naess Nearness 21
   Dr. Kulanand Yadav
4. The Role of Covid-19 Pandemic in the Digitalization of the Education Sector in India 38
   Dr. Lalan Kumar Rai
5. Tragedy and its Appeal in the Modern Times 53
   Dr. Vinay Kumar
6. The Role of Nature as a Source of Inspiration in Ruskin Bond's 'The Room on the Roof' 58
   Horen Hansdak
7. Teachings of Buddha Reflected in The Buddhacarita 67
   Jumani Das
8. The Intersectionality of gender, class and politics in the writings of Nawal El Saadawi 77
   Jyoti Kumari, Dr. ChitraJha
9. Metamorphosis of Communication and Identity in "The Giver": Navigating the Transformative Trajectory of Language and Individual Perception 85
   Mohammad Farogh Alam

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

10. Innovative Training: Opportunities and Challenges 103
Mrs. Neeta Kumbhare

11. Reversibility of Peltier and Thomson Effects in a Thermocouple 107
J.P. Mahto

12. महिला सशक्तिकरण 115
श्वेता कुमारी, डॉ. सुधीर कुमार

13. 'किस्सा लोकतंत्र' उपन्यास में राजनीतिक व्यंग्य 123
डॉ. दानचा तोंगलुक

Scanned with OKEN Scanner

महिला सशक्तिकरण

*श्वेता कुमारी
**डॉ. सुधीर कुमार

नारी आदिकालहिसँ विकास रूपी गाड़ीक दोसर पहिया रहलीह अछि। सामाजिक विकासकेँ यदि एकटा दूपहिया वाहनक संज्ञा देल जाय। ये क्रमशः घुमैत अछि, आगाँ बढ़ैत रहैत अछि तँ ओहि गाड़ीक एक पहिया पुरुष आ दोसर पहिया स्त्रीयेँ केँ मानल जाइत अछि। नारी परिवारक रीढ़ आ धीयापूताक लेल प्रथम पाठशाला होइत अछि। भारतक इतिहासमे नारी पूर्व कालमे 'सबला' रहलीह अछि। प्रत्येक धार्मिक ग्रंथमे नारीकेँ पुरुषक समान कर्म करैत देखाओल गेल अछि। त्रेतायुगीन रामायणमे कैकेयी राजा दशरथक संग देवासुर संग्रामे भाग लेलनि आ वीरांगना होयबाक प्रभाव उपस्थापित कयलनि। देवासुर संग्राममे तँ कैकेयी एते घरि कयलनि जे जखन रथक पहियाक कील निकलि गेलै आ राजा दशरथ युद्धमेलीन छलाह तँ कैकेयी अपनी आँगुरकेँ कीलक रूप घोंसिया देलनि, जाहिसँ रथक पहिया निकलबासँ बाँचि गेल आ दशरथ देवासुर संग्राममे राक्षसकेँ पराजित कयलनि। इएह ओ अवसर छल जाहि कारणेँ राजा दशरथ कैकेयीकेँ मनोनुकूल वरदान माँगबाक वचन देने छलथिन। द्वापर युगमे रूक्मिणीक वीरताः गाथा के जनैत अछि। तहिना आधुनिक युगमे रानी लक्ष्मीबाई, दुर्गा खोटे साहित्य अनेकानेक वीरांगनाक वीरतासँ इतिहास भरल पड़ल अछि। धर्म आ न्याय-दर्शनक क्षेत्रमे मंडन मिश्रक संग भारती आ वाचस्पति मिश्रक संग भामती सन-सन अनेको विदुषी एकटा खास

* शोधार्थी, मैथिली विभाग, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ
** विभागाध्यक्ष, मैथिली विभाग, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ

Scanned with OKEN Scanner

भू-भाग मिथिला मात्रमे अवतरित भेलीह अछि। आधुनिककालमे भारतीय समाजमे स्त्रीकेँ कनेक कमतर आँकल जाए लागल। स्त्रीकेँ अपन स्वतंत्र अस्तित्व कायम करबापर जेना रोक जगाओल जाए लागल। परिणाम भेल जे स्त्रीक जे स्वरूप स्थापित छल ओहिमे कमी देखबामे आबय लागल। स्त्रीक एहि अवस्थाक वर्णन करैत डॉ. तारानन्द वियोगी कहैत छथि, "अपना समाजमे युग-युगसँ एकटा चलि आबि रहल अछि जे स्त्रीक अपन कोनो परिचय नहि हो। स्त्रीक अपन कोनो अस्मिता, अपन कोनो विमर्श नहि हो। हमरालोकनिमेसँ सभ क्यो अपन अवचेतनमे नीक जकाँ अवधारि लेने छी जे अपन स्त्रीकेँ अपन परिचय देबाक अछि। कतए हमरालोकनि 'पौरुषक दर्प' केँ रूपमे अपन व्यक्तित्वमे ग्रहण कयने छी। 'हमरालोकनिमे सवर्ण-सांस्कृतिक लोक तँ आबिये जाइत छथि, संस्कृतिकृत दलितलोकनि सेहो अबैत छथि।"[1]

आधुनिक समाज द्वारा नारीक ई जे अवस्था निर्मित भेल छैक तकरा खण्डित होयब आवश्यक अछि। एहिलेल मैथिलीक लेखकलोकनि सेहो प्रारम्भ कालहिसँ प्रयासरत रहलाह अछि। एहि प्रसंग रमेशक कथन छनि, "मैथिलीक महिला लेखन एकटा निस्सन जमीन पर ठाढ़ अछि। एकर पृष्ठभूमि मजबूत छै। यात्रीजीसँ ल' के' हरिमोन झा आ ललित राजकमलसँ ल'क' अधुनातन पीढ़ी धरिक लेखकगण नारी मोनकव्यथा केँ स्वर देलनि अछि। नारी-शोषण आधुनिक मैथिली काव्य आ कथा साहित्यक प्रमुख स्वरमेसँ एक रहल अछि।"[2]

डॉ. तारानन्द वियोगी आधुनिक समाजमे व्याप्त जे मूल अवधारणा अछि तकरा बेकछबैत लिखैत छथि, "हम एकटा स्त्रीकेँ आनै छी। तानि लिअ ओकर नाम गीता छै। हम गीताकेँ आनि के 'बसविट्टवाली' कि 'चैनपुखाली' बना दै छियै। माने गीताकेँ मारि दै छियै। एहि मरणकेँ जँ गीता स्वीकारि लेलक, मने एउजस्ट क गेल तै हमरालोकनि ओकरा प्रतिष्ठा दिअ लगैत छियै। काकी, दादी आदि कहय लगै छियै। गौर करबाक बात ई अछि जे तखनहुँ हमरालोकनि गीताकेँ ओकर 'परिचय' देबासँ क' दै छियै। ओ हमर इतिहासक अंग नहि बनि पबैए, कारण जे काकी, दादी आदि इतिहासक अंग नहि बनि सकैत अछि।"[3]

डॉ. तारानन्द वियोगीक चिन्ता वांछनीय अछि, मुदा परिवर्तनक चक्र लगातार विकास दिशा तय क' रहल अछि। आबक समाज आ स्त्रीक चेतनामे परिवर्तन देखल जा रहल अछि। परिवर्तनक एहि दिशाकेँ अंगेजैत अशोक लिखनि अछि, "नारीक दशामे परिवर्तन गाम आ नगरमे एक्के रंग नहि भेलैक अछि। ग्रामीण मैथिलानीक सफलताक प्रतिशक, शहरी मैथिलानीक सफलताक अनुपातमे किछु

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

कय अछि। से बात स्वाभाविको छैक। शहर बेसी साधन-सम्पन्न अछि, गाममे बिजलीए नहि रहलै तँ टी.वी. कोना चलतै?

शिक्षाक बढ़ैत स्तर आ तकनीकि विकासक संग नारीक योगदान आ नारीक मनोदशाक चित्र विभिन्न पटलपर उभरैत रहल अछि। आबक नारीक स्वर पुनः बुलन्द होबय लागल अछि। आबक नारी हरिमोहन बाबूक 'बुच्चीदाइ चुप्प' नहि रहलीह अछि। नारी आब सामाजिक-पटल पर मुखकर भेलीह अछि। नारीक सामाजिक मुखरताकेँ देखबाक लेल ऋषि बशिष्ठक कथा 'जेहनेक तेहने'क ई सम्वाद देखल जाय - "रेखा दाइ भरल समाजक बीच बढ़लीह आ जोरसँ बाजय लगलीह- 'समाज पर भ' रहल अछि हमरा कारणेँ आ कि भ्रष्ट अछिए ई समाज! चूप्प रहू अहाँसभ। ..... सभ समाजक लोककेँ चिन्हैत छी हम! ..... नीच! ....पा! समाज उद्धारक ढ़ोंगीसभ! .....ओन्हर हमर पतिक लाश राखल आ . .....खने दिखलहुँ समाजक पविव नजरि! .....के केहन छी से हम की कहू! छीः छीः समाज नहि होइए मुह खोलैत? .....जँ हम रजिस्ट्री बियाह नहि करितहुँ तँ एहि समाजमे हमर इज्जत बाँचब मोश्किल छल! पुरुष स्त्रीकेँ मरला पर दूटा-चरिटा बियाह करओ तँ ओकर मान-प्रतिष्ठा बढ़लै आ जँ स्त्री अपन रक्षाक लेल दोसर बियाह कयलक तँ समाजकेँ भ्रष्ट क' देलक!"[5]

स्त्रीक एहि स्वरूपक यथार्थ-दर्शन समाजमे आब परिलक्षित होवय लागल अछि। नारी अपन कर्तव्य आ अधिकारक प्रति एकदम सचेत होबय लागलि अछि। मुदा, एकटा एहन वातावरणक निर्माण एखनहुँ नहि भ' रहल अछि जे स्त्रीक लेल सोचबाक आवश्यकता नहि रहैक। ओ स्वतंत्रतापर्वूक अपन अस्तित्व-निर्माणमे रत् भ' जाथि। तेँ डॉ. तारानन्द वियोगीक ई क्षोप व्यक्त हएब स्वाभाविक अछि, "कते साफ बात छै जे स्त्री जँ हमरा सवोर्ट क' दिअए, हमर समर्थक बनि जाखनहुँ हम ओकरा संग न्याय नहि करैत छिथै। ओ जँ हमर प्रतिरोधमे डाढ़ भ' जाए तखन तँ हमरालोकनि जे करै छियै, तकर आख्यानसँ मिथिला जन-इतिहास भरल पड़ल अछि।"[6]

आब मुदा स्थिति तेहन नहि रहत! कालक्रमेण नारीक मनोबल आ आत्मबल सम्पुष्ट भेल अछि। स्त्री अपना पहरपर ठाढ़ भेलीह अछि आ बजबूतीक संग एहि दिशामे कतारबद्ध छथि। आब नारी चितकेँ 'उचित' आ अनुचितक प्रतिकार करब प्रारम्भ क' देलनि अछि। नारीक एहि स्वकेँ अहषि बाशिशुक नाटक 'सिया के सकल देखि' मे स्पष्ट रूपेँ देखल जा सकैत अछि।

"(एकाएक मंचपर जानकी प्रवेश करैत आ सीताक बाँहि पकड़िक' पाछाँ खिचैत)

Scanned with OKEN Scanner

रुकि जाउ! .....पुरुषक आदेश पर कहियाधरि अग्नि-परीक्षा दैत रह मैथिली? ..... की सीताकेँ एखनो धरि बजबाक सामर्थ नहि भेलनिहेँ? ..... हे पुरुष शिरोमणि! भ' तँ गेल राजा रामकेँ राजगद्दी आब अपन भाभट समटै जाउ! ई बनौआ खिस्सा देखा-देखा स्वी समाजकेँ कहिया धरि ठकैत रहब?''

एहि तरहेँ नारीक जे एकटा नव सामाजिक छवि-निर्माणक प्रक्रिया प्रारम्भ भेल अछि, से स्वागतेय अछि। नारीकेँ सशक्त भेलाह समाज आ राष्ट्र स्वतः सशक्त भ' जायत से कल्पना कहल जा सकैत अछि।

इ बनौआ खिस्सा देखा-देखी स्त्री-समाज केँ कहिया धरि ठकैत रहब?''

आई समाजमे पहिने वला बात नहि रहल आजुक महिला सशक्तिकरण दिखाई पड़त अछि। पहिने समाजमे मनुख लोकनिक घरकेँ महिलाकेँ घरे-आँगन धरि संजोगकेँ राखेत छलाह। हुनक हुनर/प्रतिभा बटवाकेँ अवसर नहि दैत रहथिन जाहिसेँ महिला लोकनिक अपन समाजमे या लोकसमाजमे इनारक बेंग बनि रहि जाय छलाह। मुदा जहिना-जहिना समय बदलल, समाजक विकास भेल तहिना-तहिना महिला सशक्तिकरणकेँ बात पर महिला लोकनिक अथक प्रयासक बाद आजुक समाजमे अपन स्थान बनोलेन अछि। अधिकांश महिला लोकनिक घरमे रहथि अपन विशेष कलाकृति घर सजावे स्वादिष्ट-स्वादिष्ट भोजन तिमन, तरूआ, पर-पकवान बनाबैत रहथि ओ अपन जैभि किछ जानैत रहलहि जेना-निकसँ-निक गीत सिलाई बुनाई कोनो भी साज-सज्जाकेँ वस्तु बनावैत छलीह ओ सब प्रतिभा घरमे रहि जाइत छलाह। कियाकी एहि समाजमे महिला लोकनिक पुरुष वर्ग सँ कन्धासँ-कन्धा मिलाकेँ काज करैत देखिकेँ समाजक किछ लोकनिक निक नहि लागैत छलाह। समाजक किछ लोक जे छलथिन हुनक नजरिमे महिला लोकनिक घर लेल जरूरी तँ छल। मायकेँ रूपेँ बहिनकेँ पत्नी केँ वा बेटीँ रूपे मुदा समाजिक रूपेँ सहभागी बनि हर क्षेत्रमेँ निकले एहि बातक विरोधि रहथिन। महिला लोकनिक एहि पुरुष वर्ग समाज मात्र अपन जरूरतकेँ साधन बूझैत छलाह। अपन घरकेँ उपयोगिता लेल आवश्यक समझैत जैना अपन वंश बढ़ावे लेल, भोजन पकावे लेल, घरकेँ सजावे लेल व सुशोभित रखवालेल। महिला लोकनिक एहि कारणेँ अशिक्षित रहबाक कारणेँ महिला लोकनि जेँ दुःख भोगल ओ भागि लेलक, मुदा घर सेहोँ बिखरे लागल, टूटे लागल घर परिवार मे कठिनाई ए लागल जैना कोई पुरुष अगर घरमेँ नहि रहथित घरकेँ कोनो बीमार सदस्यकेँ दवाई दैकेँ अछि। महिला लोकनिक दवाईकेँ रंग देखिकेँ दैत छलाह कियाकि ओहि दवाईकेँ नाम तेँ बुझल नहि छलाह। एकटा कहबि अछि-काला अक्षर भैंस बराबर जिनका अक्षरल

Scanned with OKEN Scanner

ज्ञान नहि अछिते ओ अक्षर की पहचनतँ अशिक्षित होयबाक कारणेँ बहुत बेड़ बहुत घरमे बीमार लोक केँ स्त्री लोकनिक उलटा-पुलटा दवाई दै देत रहथि, जाहि कारणेँ अस्वस्थ लोक स्वस्थ होयबाक जगह आर रोगी मैं जाइत छलाह हुनक स्वास्थ आर बिखेड़ जाइत छलाह। अशिक्षित कारणेँ महिला लोकनिक नहि चाहेत हुए भी समस्या उत्पन्न कँ दैत रहथिन। ओ चाहिओ के अपन सहयोग सहीसँ नहि दैत रहथिन। अपन नैनाकेँ सब संस्कारत तँ दैत रहथिन मुदा शिक्षाकेँ लेल अक्षर ज्ञान वा बाहरी ज्ञान एक महिला नहि छँ रहथि कियाकि महिला लोकनिक स्वयं हि अक्षर ज्ञानकँ अभाव रहेत छलाह। एहि विषय मे हरि मोहन झा अपन एकटा उपन्यास लिखनेँ छथि। जाहि मे स्त्री शिक्षाक अभाव केँ हुनक उपन्यासकँ नाइकँ बुचि दाई के विवाह तँ होइत अछि मुदा हुनक विवाह केँ उपरांत दामपत्य जीवन आयु नहि बढ़ैत अछि। एकर कारण बुचि दाई केँ अशिक्षित होन छै कियाकि हुनक वर शि.शि. मिश्र शिक्षित रहथि हुनका एकटा अशिक्षित महिलाकेँ संगे जीवन व्यतीत करबा मे कठिनाई बुआइत छलाह एहि उपन्यासँ हरिमोहन झा केँ अलग तरहकेँ पहचान भैटल। हुनक उपन्यासकेँ लोग बहुत पसंद कयलनि ओ लोकप्रिय उपन्यास भलाह हरिमोहन झा केँ 'कन्यादान' उपन्यास सँ समाज एहि तरहेँ प्रभावित भैल छल जे बेटी विवाह काल मे साठ मे एहि उपन्यास केँ उपहार स्वरूप बेटी के संगेँ दै जाइ लागल। हरिमोन झा केँ एहि उपन्यास केँ समाज ऐतक प्रभावित छल जै हरिमोन झा केँ 'द्विरागमन' लिखबा लेल विवश केँ दैलन।

आधुनिक क्रम मे महिला के प्रति बदलैत राजनीतिक सोच : लिंग, धर्म, वर्ग या समाजिक प्रतिष्ठा केँ आधार पर भेदभाव कायल बिना महिला लोकनिक आर्थिक समाजिक तथा शैक्षिक अधिकार भेटबाक चाहि। ओना तँ अधिकार देना चाहि, कहै सेँ दिमागमे एक सवाल दौड़ैत अछि कि महिला लोकनिक हुनक हक अधिकार दैववाला हम या अहाँ कै छी?

भारत एक एहन देश अछि जतै महिला लोकनिक पहिल प्राथमिकता भेटे अछि हालांकि दोसर ठाम समाजिक रूपे पुरुष बनौने अछि। महिला लोकनिक घर परिवारमे उलझाक केँ हुनक कन्हा पर जिम्मेवारी के एहन बोझ लादेइत छैल गैल अछि। जे ओ स्वयं चाहियो केँ ई सबसँ निकले मे नकाम भअ जाइत छै।

सबसँ पहिने तँ हुनक जन्मकालसँ भेदभाव होइत अछि जतेँ कँ जन्मोत्व केँ खुशी मे परिवारक लोक पूरा मोहल्ला भर मे मिठाई खिलावैत अछि व भोज करावैत अछि ओहि ठाम बेटी जन्मकाल मे अधिकांश घरमे युग मे भी मातम मनावल जाइत अछि। यहातक कि माँ के गर्वमे बच्ची के मारल जाइत अछि।

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

भ्रूण हत्या जैहन जघन्य पाप मात्र एहि लेल होइत अछि कि कोख मे लकड़ी अछि आ हुन परिवार लोकनिक लड़का चाहि। लिंग परीक्षणक बाद इहो आधुनिक युग मे जे जाइन जाइत अछि कि लड़की अछि तँ हुनक जीवनक अहोलीला पृथ्वी पर आवे सेँ पहिने समाप्त कऽ दैल जाइत अछि। एहि दोहरी सोच केँ लोकनिक लागैत अछि जे हीनक कुलक नाम हीनक बेटा व पोता बंश बढ़ावैत हीनक एहि घटिया सोच केँ भारत केँ पहिल महिला प्रधानमंत्री इन्द्रिरा गाँधी करारा तमाचा दैलेन।

"सभी देवताओ से उत्पन्न भैल अतुल्य तेज जब एकत्रित भैल तँखन ओ नारि बनल दैवत। जै देवी केँ पूजै छथिन ओ देवी सेहो नारि छथिन।"

इ महिला जग केँ सिरजन हार छथिन मनक बढ़ कोमल तन से नाजुक शक्ति केँ अवतार अछि।

हम अहाँ हुनक कि अधिकार दैव जिनकर कारणेँ हम छि अहाँ छि अपन पहचान अछि। हम अहाँ हिनक श्रेष्टता सँ अगर अनजान छी तँ अहि अपन लोकनिक गलती अछि जबकि पूरा दुनिया लोकनिक सिया-राम, राधा-कृष्ण, गौरी-शंकर नाम पर जाप करैत अछि। जखनँ देवता सेहो नारि कँ आगा राखैत अछि नारि केँ पूजैत, अछि तँ कैर हम त अहाँ केँ ? उमर के हर प्रड़ाव मे, हर दिन, हर पल, हर घड़ी हिनक अस्तित्व वंदनीय अछि। महिला लोकनिक लैल 8 मार्च के महिला दिवस मनावल जाइत अछि वर्ष मे एक दिन हर तरफ महिला लोकनिक बात-प्रोग्राम होइत अछि व सोशल-मीडिया पर सब ठाम हीनक अधिकारक बात होइत अछि। जबकि स्त्रीकँ स्त्रीत्व केँ उल्लास तँ स्त्री लोकनिक हर साँसमे मनबैत अछि।

आजुक युग मे अपना लोकनिक 21वीं शताब्दी मे जी रहल छी। जमाना इतना आँगा बढ़ चुकल अछि चारो तरफ तरक्की भँ चुकल अछि। देश को या विश्व स्तर सब ठाम काफी बदलाव भेल। अपना लोकनि चाँद पर पहुँच चुकल छी कहियो हम आजुक युग मे महिला लोकनिक शिक्षित, उच्च शिक्षित करवा लेल हिचक रहल छी।

अपना लोकनिक देशक विकास लेल, समाजक विकास लेल महिला लोकनिक आगाँ बढ़ावै पड़त, महिला लोकनिक आत्मविश्वासी बनावय होयत। महिला लोकनिक बेकारक पाबंदी नहि अपितु हुनका लोकनिक लेल पंख बनै पड़त।

महिला लोकनिक केवल घर-परिवार तक सीमित नहि राइख केँ हुनक हर क्षेत्र मे साथ देवाक चाहि। महिला लोकनिक सशक्ति बनावाय लेल जै लैंगिक

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

भेद-भाव अछि। ओहि भेदभाव कें जड़सँ मिटावे पड़त। महिला लोकनिक सम्मानजनक जीवन जीयब लेल पूरा हक व अधिकार दे पड़त अपन बेटी कें पढ़ाई लेल हुनक शिक्षा कें हर अभिभावक लोकनिक जागग्रुक होइवाक चाहिए।

जेना कि अपन बेटा कें लेल शौक रहैत अछि पढ़ायब लिखायब, नौकरी करायब ओही प्रकार बेटीयों कें लेलँ सौख होबाक चाही। बेटी पढ़त, लिखत, नौकरी करत शिक्षित समाज के हिस्सा बनत महिला लोकनिक पढ़त तँ घर-परिवार अ देश मे अपन योगदान दैत।

आजुक समयमे देख रहल छी कि केना महिला लोकनिक क्षेत्र मे बढ़-चढ़ कें हिस्सा लँ रहल अछि। एहन कोनों काम नहीं अछि जे पुरुष करत व महिला नहि, महिला लोकनिक कान्हासँ-कान्हा मिलाकें चल रहल अछि चाहे वो विद्यालय मे शिक्षिका बेनके, अस्पताल मे चिकित्सा बेनके, हवाई जहाज मे पाइलेट बन के ओही ठाम अपन योगदान दैत अछि। वर्तमान मे महिला लोकनिक हर क्षेत्र मे अपन योगदान दँ रहल अछि आ ओ किन्को से कम नहि अछि।

आधुनिकरण मे महिला कें प्रति बदलैत समाजक सोच : जाहि मे महिला लोकनिक पुरुष वर्गसँ कन्हासँ-कन्हासँ मिलाकें रहत छथि। ज्ञान विज्ञानकें क्षेत्र होए अथवा समाजिक क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्रमे योगदान दैत अछि एक सुदृश्य समाजक निर्माण करैत अछि। आजुक महिला सिलाई-बुनाई कढ़ाई सँ लक अपने घर आँगनमे नहि अपितु देश-विदेश घरि अपन प्रतिभा/हुनकर के ँ एक नव पहचान दिवैलेत जाहिमे मिथिला पेंटिंग, सुआ परक सुजनी, बासक कलाकृति आदि समृत अछि।

मिथिला चित्रकारिता : जें मिथिला वा मधुबनिकला मिथिला क्षेत्र धरि समिति छलाह ओ आइ देश-विदेश जावान, नेपाल, अमेरिका, आदि मे अपन देशक अपन संस्कृतिके चित्रकें माध्यमसँ एकटा मिथिला वा देश दुनियाँ मे मिथिलाकें लहरौलैत।

सुआ परक सुजनी : कम लागतमे महिलालोकनिक अपन जीवनयापन दिवसँ चलबैत अबि रहल छल जाहिमे पुरानधुरान गुदरी कपड़ा सभक उपयोग कके ँ बिछावन बनावे लेल सुजनि बनाबैत छल। एहि प्रतिभा मुदा आजुक युगमे एहि समाजसँ निकलके ँ देश-विदेश घरि पहुँच गेल अछि।

बासक कलाकृति : बासक कलाकृति मूल्यतहसँ दलित महिला वर्ग के ँ जिवकोपार्जन कें साधन छल। जाहिमे दौड़ी, कोनिया, चगैड़ा, डगरा, छिट्टा, पंखा, विवाह के विभिन्न कलाकृति मुख्यरूपें ँ सामिल छल। मुदा आजुक युगमे आजुक समाजमे वो विशेष रूपसँ सभ आँगन घरि ओ पहुँच गेल अछि जे हुनका लोकनि

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

आ संगही बासक सीकसँ छोट-छोट विभिन्न कलाकृतिकेँ विदेशमे बेचलजाय लागल जाहिएँ एहि समाजकेँ महिला लोकनिक आर्थिक आ सामाजिक सहायता भेटल। आ एहि कारणे महिला लोकनिक नव पहचान भेटल।

सोशल मिडिया पर महिला लोकनिक बिजनेस : पहिन केँ महिला लोकनि कोनो भी प्रतिभा वा हुनक घरमे रहि जाइत छलाह मुदा आजुक युगमे महिला लोकनिक घर बसेल काजककेँ अपन जीवनयापन क रहल छथि वा अपन हुनर के साँभपकभक सामने भी आनि रहल छथि आ ओहि सँ समाजिक लोकनिक सेहो सुविधा भेटैत अछि। जेनाकि बाहरमे रहेवाला लोकके घरक सुविधा भेटैत अछि कोई महिला लोकनिक आचार बनवैत अछि तँ कोई, पापड़, अदोड़ी, मिठाई, मसाला आर किछ-किछ जाहिएँ। देश-विदेश वा अपन घर छोड़ीजेँ लोक बाहर रहैत अछि हुनकोँ घरकेँ स्वाद भेटैत अछि वा महिला लोकनिक सेहो आर्थिक सहायक भेटैत अछि, कतेको महिला आय अपन प्रतिभा के अनेको रूपेँ सोशल मिडिया के जरिया सँ बाहर ककेँ अपन जरूरतकेँ पूरा करैत छथि एहि आजुक आधुनिक युगकेँ सोच वा समझकेँ फल छथि।

निष्कर्षः मूल बात इ अछि जे जहिआ सँ लोक समाजक उत्पत्ति भेल अछि तहिआ सँ कतेको युग बदलैत गेल मुदा नहि बदलल ओ अछि नारि के प्रति समाजक सोच जेना सती प्रथा, दहेज प्रताड़ना आ बंस बढ़वैक साधन एहि तरहें सोंच पुरूसता केँ देखाबइत छल। मुदा आधुनिक समाज मे ओ नारी जे युग-युग सँ बेचारी बनल पुरूषक दासी कऽ जीबनक जीव रहल छल ओही बेरीकेँ तोड़ीकेँ ओ आगा पाइर पसारल आ पुरूष वर्ग समाजमे अपन सकती कऽ परिचय दैत सब क्षेत्र मे ओ कन्हा सँ कन्हा मिलाकऽ चलइ लागल आ अपन पुरूषवादी समाज मे स्थान बनाओलक जेकरा सँ समाज मे एक नव चेतना केँ संचार भेल अछि जेकरा समाज नहि नकारि सकैत अछि।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बहुवचन, डॉ. तारानन्द वियोगी, किसुन संकल्प लोक, पृ.-304
2. निकती, रमेश, नवारम्भ प्रकाशन, पृष्ठ- 35
3. बहुवचन, डॉ. तारानन्द वियोगी, किसुन संकल्प लोक, पृ.-305
4. मिथिला सृजन, सं.-अदपि बिशिष्ठ नारीक बढ़ैत छाप, अशोक, 2012
5. माटिपरक लोक आ सुफाँटि जकरा, जेहने के तेहने, ऋषि बशिष्ठ, मैलोरंग प्रकाशन, पृष्ठ-36
6. बहुवचन, डॉ. तारानन्द वियोगी, किसनु संकल्प लोक, पृष्ठ-305
7. सिया के सकल देखि (नाटक), ऋषि बशिष्ठ, अनुप्रास प्रकाशन

Scanned with OKEN Scanner

आ संगही बालक सीकसँ छोट-छोट विभिन्न कलाकृतिकेँ विदेशमे बेचलजाय लागल आहिएँ एहि समाजकेँ महिला लोकनिक आर्थिक आ सामाजिक सहायता भेटल। आ एहि कारणे महिला लोकनिक नव पहचान भेटल।

सोशल मिडिया पर महिला लोकनिक बिजनेस : पहिन केँ महिला लोकनि कोनो भी प्रतिभा वा हुनक घरमे रहि जाइत छलाह मुदा आजुक युगमे महिला लोकनिक घर बसेल काजकके अपन जीवनयापन क रहल छथि वा अपन हुनर के सँभथकथक सामने भी आनि रहल छथि आ ओहि सँ समाजिक लोकनिक सेहो सुविधा भेटैत अछि। जेनाकि बाहरमे रहेवाला लोकके घरक सुविधा भेटैत अछि कोई महिला लोकनिक आचार बनवैत अछि तँ कोई, पापड़, अदोड़ी, मिठाई, मसाला आर किछ-किछ जाहिएँ। देश-विदेश वा अपन घर छोड़ीजे लोक बाहर रहैत अछि हुनको घरके स्वाद भेटैत अछि वा महिला लोकनिक सेहो आर्थिक सहायक भेटैत अछि, कतेको महिला आय अपन प्रतिभा के अनेको रूपेँ सोशल मिडिया के जरिया सँ बाहर कके अपन जरूरतके पूरा करैत छथि एहि आजुक आधुनिक युगके सोच वा समझके फल छथि।

निष्कर्षः मूल बात इ अछि जे जहिआ सँ लोक समाजक उत्पत्ति भेल अछि तहिआ सँ कतेको युग बदलैत गेल मुदा नहि बदलल ओ अछि नारि के प्रति समाजक सोच जेना सती प्रथा, दहेज प्रताड़ना आ वंस बढ़वैक साधन एहि तरहें सोंच पुरूसता के देखाबइत छल। मुदा आधुनिक समाज मे ओ नारी जे युग-युग सँ बेचारी बनल पुरूषक दासी कऽ जीबनक जीव रहल छल ओही बेरीकेँ तोड़ीकेँ ओ आगा पाइर पसारल आ पुरूष वर्ग समाजमे अपन सकती कऽ परिचय दैत सब क्षेत्र मे ओ कन्हा सँ कन्हा मिलाकऽ चलइ लागल आ अपन पुरूषवादी समाज मे स्थान बनाओलक जेकरा सँ समाज मे एक नव चेतना केँ संचार भेल अछि जेकरा समाज नहि नकारि सकैत अछि।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बहुवचन, डॉ. तारानन्द वियोगी, किसुन संकल्प लोक, पृ.-304
2. निकती, रमेश, नवारम्भ प्रकाशन, पृष्ठ- 35
3. बहुवचन, डॉ. तारानन्द वियोगी, किसुन संकल्प लोक, पृ.-305
4. मिथिला सृजन, सं.-अदपि बिशिष्ठ नारीक बढ़ैत छाप, अशोक, 2012
5. माटिपरक लोक आ सुफाँटि जकरा, जेहने के तेहने, ऋषि बशिष्ठ, मैलोरंग प्रकाशन, पृष्ठ-36
6. बहुवचन, डॉ. तारानन्द वियोगी, किसनु संकल्प लोक, पृष्ठ-305
7. सिया के सकल देखि (नाटक), ऋषि बशिष्ठ, अनुप्रास प्रकाशन

Scanned with OKEN Scanner

Regd. No.:UTTBIL/2011/40666 ISSN: 2230-8938

ANUSANDHAN VATIKA

(An International Multidisciplinary Quarterly Bilingual Peer reviewed Refereed Research Journal)
Address: Uttarkashi, Uttarakhand- 249193 (India)I Mobile No.: 94585-04123
Email ID: researchvatika@gmail.com

No.: AV/03/10-12/23 Date: 08-10-2023

To,

श्वेता कुमारी
शोध छात्रा, पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया

Sub: Acceptance letter for Publication of your Research Paper **"मैथिली नाटक में नारी–विमर्श".**

Dear Sir/Madam,

This is to inform you that, your research paper Paper **"मैथिली नाटक में नारी–विमर्श"** has been shor listed for publication in our Journal, Anusandhan Vatika, Vol. 13, Issue 4, October-December 2023 issue.

Thankfully, Wishing You all the Best.

Yours truly

ANUSHANDHAN VATIKA

EDITOR

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

RNI Regd. No. UTTBIL/2011/40666

UGC Journal No: 41391

ISSN: 2230-8938

Impact Factor: 5.527

ANUSANDHAN VATIKA

(An International Multidisciplinary Quarterly Bilingual
Peer Reviewed Refereed Research Journal)

Vol 13 • Issue 4 • October-December 2023

EDITOR
Suresh Chandra

SUB-EDITOR
Nilisha Singh
Mamtesh Kumari
Shikha Mamgain

PUBLISHED BY
Sahitya Kala Vigyan Tatha Sanskriti Anusandhan Samiti
Uttarkashi, Uttarakhand –249193 (INDIA)

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

EDITOR'S NOTE

Human society is a dynamic institution. Social change is the result of its dynamism. Developing from primitive stage, man has today reached the scientific age. The changes taking place in the social, economic, political, scientific, literary and educational fields have created new problems and challenges for the human society. There were many changes in human thinking, outlook and attitudes also. In this perspective, changes in the content, objectives, structure and system of education etc. became necessary. Thinkers and planners in the education sector understood the need for change and moved towards change. In India also, due to changes in various fields after independence, problems and challenges like unemployment, youth dissatisfaction and youth unrest strengthened the need for change in education. As a result, certain changes, such as distance education, open university, continuing education, population education, environmental education, value education, parent education etc. were incorporated in the Indian education system. These changes taking place in the education sector were addressed by the names of innovation in education, new dimensions in education, modern trends in education etc. The National Education Policy, 1986 and 1992 came as a challenge for the education of twenty-first century India. But due to faulty thinking and neutral role of the system, he too is not getting success. On the waves of time, first primary education, then secondary education and then higher education declined. Even today, the constitutional concept of compulsory education for children up to 14 years of age has not materialized due to the apathy of the government. Various steps are being taken to overcome the decline in higher education. It is noteworthy that with the announcement of the New Education Policy 2020, the name of the Ministry of Human Resources has been changed to Ministry of Education. Through this policy, transformational reforms are expected in school and higher education in the country. Under its objectives, 100% GER in school education as well as universalization of education from pre-school to secondary level is targeted by the year 2030. Under the New Education Policy, 2020, children between 3 years to 18 years have been kept under the Right to Education Act, 2009. This new education policy, which came after 34 years, aims to provide higher education to all students with the aim of making pre-primary education (age range 3-6 years) universal by 2025.

As part of this process, the journal Anusandhan Vatika is presented to you as a medium of cognitive dialogue between Scholars, teachers and the academicians. Conceptual and experiential interpretation and analysis have been presented in this issue along with new factual information on multidisciplinary research related questions. Some of the research papers included in the research journal does not appear to be fully following the theoretical criteria of the research methodology. Nevertheless, due to the originality and novelty of the ideas, they have been given a place in the journal so that they can be combined in the integrated curriculum of the journal. Hope this issue of Anusandhan Vatika will be helpful in communication of research stream.

— Editor

Scanned with OKEN Scanner

TABLE OF CONTENTS

Conjugality Problems and Promises- Dr Santosh Thakur 1
दलित विमर्श का बदलता स्वरूप- नेहा कुमारी 6
किसान आन्दोलन का आर्थिक राजनीतिक प्रभाव- डॉ0 मिथुन कुमार पासवान 10
अनुसूचित जातियो में कुपोषण की समस्या- एक अध्ययन- कौशल मणी 14
Role of Nuclear Doctrine Policy in Empowering India- Monika 16
हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्शात्मक उपान्यासों की भूमिका- ऋतु रत्नम 22
अलका सरावगी के उपन्यासो में चित्रित समस्याएं- भुलाभाई डी परमार 24
शैलेश मटियानी के उपन्यासो में समसामयिकता- धनेशकुमार शिवाभाई सोनेरी 26
भारत मे हिन्दु विवाह की समयोजन की विशेषता एक अध्ययन- रंजना वर्मा 28
कोसी क्षेत्र मे आंचलिक इतिहास लेखन का ऐतिहासिक अध्ययन- डॉ0 मो0 अरसद 35
कबीर के काव्य मे वनस्पति विज्ञान- रवि 38
विवेकानंद के नव-वेदांत में राष्ट्र बोध- डॉ0 रजन कुमार 42
आदिवासी कवयित्रियो की कविताओ मे स्त्री-जीवन का यथार्थ- कु. जीशाना बानो 45
नकदी रहित भुगतान व्यवहार में शामिल- एक अध्ययन- डॉ0 मुकेश कुमार 53
भूपेन्द्र नारायण मंडल समाजवाद के प्रहरी- एक अध्ययन- डॉ0 माधव कुमार 57
बालक के शारीरिक, मानसिक व सामाजिक विकास मे पारिवारिक वातावरण की भूमिका- आशा मेविस फिलिप; प्रो. पूनम देवदत्त 59
आधुनिकीकरण और परिवार कल्याण एक अध्ययन- डॉ0 ब्यूटी कुमारी 63
पृथक् बिहार राज्य निर्माण आन्दोलन का एक ऐतिहासिक अवलोकन- अविनाश कुमार; डॉ0 पीयूष कमल सिन्हा 65
स्वतंत्रता पश्चात् बिहार मे शिक्षा के विकास में महिलाओं का योगदान- डॉ0 अमरधर लाल 69
भारत में नाथ संप्रदाय के परिप्रेक्षय में सम्प्रदाय का सामाजिक और राजनीतिक विश्लेषण- डॉ0 सरवन सिंह बघेल 74
Artificial Intelligence in Stock Market Prediction based on Machine Learning for Automatic Trading- Dr Akhilesh kumar Dixit 78
Technologies for Blended Teaching Learning- Dr. Bhavna Singh 88
साहित्य में शगुन अशगुन की प्रासंगिकता- डॉ0 सुनील यशवंत व्यवहारे 96
तेलुगु संस्कृति का प्रतीक है संक्रांति- डॉ0 एम0 यशोदा देवी 99
A Study on the Perceived Attitude of SHGs Members towards Economic and Social Impact- Rukhsana Jameel, Dr. Dharminder Singh 102
समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरणीय चेतना की अभिव्यक्ति- शरद प्रताप 114
Assessment of Water Pollution of Ramgarh Tal of Gorakhpur City- Mr. Sooraj Prakash Mishra 119
प्रेमचंद के साहित्य मे स्त्री पात्र- डॉ0 निपा एस. 124
रेणु का 'मैला आँचल' और आंचलिकता- डॉ. सिन्धु सुमन 126
लोक संचार: सन्देश की सरल, सहज एवं सरस अभिव्यक्ति- डॉ0 रविंद्र सिंह; सुमित महाजन 130
भारत के प्रधानमंत्री की वास्तविक स्थिति एवं भूमिका एक राजनैतिक अध्ययन- कुमारी अर्चना 134
मैथिली नाटक में नारी-विमर्श- श्वेता कुमारी 138

ISSN: 2280-8398

Scanned with OKEN Scanner

ISSN: 2230-8938

RNI Regd. No. UTTBIL/2011/40666

ANUSANDHAN VATIKA

(An International Multidisciplinary Quarterly Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal)

* Vol 13 * Issue 4 * October-December 2023

मैथिली नाटक में नारी–विमर्श

श्वेता कुमारी

शोध छात्रा, पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया

भारतीय नाटक सन्दर्भ मे कहल गेल अछि जे भाषा नाटकक महल संस्कृत नाटकक समाधिपर बनल अछि जहिया बेनीय भाषा सलक उदय हो जब प्रारम्भय भेल तहिया संस्कृत नाटक पतनावस्थामैं अभिगेल। तथापि संस्कृत नाटकक प्रभाव ऐतक जोरगर छल जे ओहु भाग सभमें जे अधिकाधि कनय सरल सुबोध टंगक नाटक विकसित करबाकर प्रयास कएल गेल ताहुमें संस्कृत ओ प्राकृत प्रमुखता पूववते रहलैक केवल भाषा गीत अधिकाधिक मागान ओहि मै भरल जाय लागल मैथिली नाटकक आरम्भिक अवस्थापर विष्लेषण दैत डॉ0 जयकान्त मिश्र कहैत छति समस्त पूर्वोतर भारत मे जे मुसलमान विजेतासीक अभिधात से किछु दूर छल कालक्रमेल नब नब ढंगक नाटक उद्भूत भेल जेना बंगाल मैं भागा असम मे अकयि नाट आओर मिथिलामें किरतनिया। एहितीन प्रकारक नाटकक जन्म प्रथम कृष्ठा भश्रित गैलैक किन्तु कमाहि कमहि ओ नाटकसम धार्मिक सीमा टपि गेल। धार्मि सीमा से बाहर असल्हुएप एहि में पौरानिक कथाक प्रमुखता रहवे कएल।[1]

संस्कृते नाटक जहाँ आरम्भ में मैथिली नाटक द्रष्टा केवल राजदरबारक महिला आ पुरुषलोकनि होइत छलाह। किछ दिनक बाद जन साः ारणक लेल उपयोग नाटकक एकटा स्वतंग परम्परा स्थापित भेल एहितरहक नाटकेंक किरतनियाँ नाटकक नाम देल गेल। किरतनियाँ नाटकक दर्षकस अड़ोस पड़ोसक सामान्य नागरिक पंडित अर्धपंडित साक्षर निरक्षर महिला बालक बालिका सभी होजए लागत एतिहरहक किछु हानि तै किछु लाभ दुनू तरहक प्रतिफल प्राप्त भेल जतय नाटकक साधारणीकरण संस्कृत भी प्राकृत ले किछु अवरोष रहि जेल छल सिहो सामाप्त भेल ओरहि ना कथानकक विकास भेल नाटकी नव जिसका चतुक समानेष प्रारभ्य भेल आए नाटकक भक्ति भावपूर्ण माग नाहि रही सामाजिक समलासभपर केंद्रित होगा लागल जखन सामाजिक समस्यासभर विचार होया लागल तै समाजिक कुरीति समके केन्द्रमें आनल जाय लागल मैथिली नाटकक प्रारम्भिक काले मे जो कारक नाटक समक चर्य अछि ओहिमें उसाहरया पारिजातहरण रूकिसजीहम आओर गौरी स्वयंवर आदि प्रमुख छल। कहल जाइत अछि जे प्रारम्भिक कालमें कृषणा एवं शिवक कथावला नाटकर समय अधिक सफलतापूर्वक मंथित भेल ते एहि नाटकक ष्यौली के किरतनियाँ नाटकक कहल गेले।

मैथिली नाटकमें विषय–प्रवर्तमन सन्दर्भमें अपन मत व्यक्त करैत डा0 जयकान्त मिश्र लिखैत छयि मिथिला में नव प्रकार नाटकद्रुत गातियाँ विकसति होअए लागभ नव प्रयास सभ आगाँ अयलाह पं0 जीवन झा हिनका भान भेलनिजे नाटककर हेतु नव नव आओर रोचक धटनावली चुनाव आ कल्पित करब आवष्यक एही कारणों ई नाटकक सट्टक नामक प्रभेदकै चुनलनि सुन्द्र संयोग एक प्रथम नमूना थिक ई अपन नाटक मे मैथिली गद्य ओहिना चलौलनि जेना पूर्व मैथिली नाटकमें संस्कृत आ प्राकृत चलैत छल सक्षसे बढ़ि हुनका प्रतीत भेल जे आधुनिक नाटकक यथार्य स्वरूप की थिका ई किछु मनौवैज्ञानिकताक अवलमब कएलनि आओर एहन गहन स्थितिके पकड़लनि जै मैथिल जीवमें स्वभावत परम सम्भाव्य ओ सत्य छल।[2]

जहिना मैथिलीक अन्यानया विधासमें नारी विमर्ष रचनाकारलोकनि कयलनि अछि तहिना एकौकी आ नाटकमें सेही अनको नाटककर लोकनि कयलनि अछि। ज्योतिरीष्वर ठाकुरक धूर्त समागम में स्त्री पागक जे वर्णन अछि ताहितमतं स्त्रीक जरिगके ओहन छूर्ततापूर्ण देखयबाक मूल उदेष्य अछि समाजके नौकट करब जाति समाजकर पुरुष वर्गक आधिपत्य रहेलैक तकरा नीक आ कि बेजाय बनेबाक उतर दायित्व सेही ओही वर्गक माथपर जैतैक ओना मिथिलाक नारी बौद्धिक तर पर सेही ओही वर्गक माथपर जेतैकर ओना मिथिलाक नारी बौद्धिक उतर पर

Scanned with OKEN Scanner

सेहो कतेक आयाँ छथि तकर प्रमाण विभूति आनन्दक एकाकी समय संकेत देखल जा सकैत अछि सामाजिक परिस्थितिक वर्णन करैत विभूति आनन्द वर्णन करैत छथि आनन्द : हमरा बूझल अछि। हमर गाम घरक पालने पोसन ताहि ढंगे भेल जाहिमें ई स्वाभाविक छै आइ बड़का मैया सौंसी कहै छी हम हमर परिवार समके काट दौगे छै एवं धरि जे जकर पेटमं नौ मास धरि पोसाएल छी तकरो हम काट दौगै छिऐ।[3] जे जकर पेटमे नौ मास धरि पोसाएल छी तकरो हम काट दौगै छै। एत धरि पुरुष जखन परिस्थितिवष विचलित होबय लगैत अछि धैर्यक सीमा दूटियाजकृत छौक आ बाद्धिक प्रबल धारमें मासिआया लगैत अछि तखन स्त्री बौद्धिताक परिचय दैते ओकरा कोना दृष्य एहि सम्बादक माध्य में विभूति आन्नद प्रस्तुत कमलनि अछि पुनम त ताइ लए माहुर खा लेब ई मे इएत प्रकूिल स्थिति ई म रोरते छै माजी जे एते तिरछल रहै छथिन से हुनकर दखे नै हमार जपकी के दुस्थिति दोख अएि माँजीक हृदय निर्मल छनि दुकान हमारा अहास का दुखमनी नै छनि' परिस्थिति हुनका काटाह बना देने छनि ओ निपढ छथिन आजुक हवा पानिक हुनका अनुभव नै छनि तै करवानो काल उंच नीच बालि देल करै छीयन बुकबा सुबालक एका सीमा छनि आ तै हनुकर किछु बाजब स्वभाविके छनि।[4]

परिवार के टुटबाब बचयबाक लेल एकटा स्वीक एति तरह सोचसे ई तै प्रमाणित होइ ते टा छैक जे स्वी बौद्धिक रूपयो सम्ब अछि मुदा ओकर उचित मूल्यांकनक अभाव सेहो स्त्रीके कमतर ऑके छैक एकटा उच्च शिक्षित युवक जंखन परिस्थति वंष मानसिक रोग से ग्रस्त मे जाइत अछि परिस्थिति जखन एकमद विपरीत में जगहत अछि तेहन स्थिति नारीक बौद्धिक सहयोग पुरुषके सबल बननैत अछि एहि तरहक चिन्ताजन स्थिति बर्णन रहैत नाटकार विभूति आनन्द समय संकेत एक लिखलनि अछि ''हो भगवान

कागत एहन लिखन किए नाम
कि मन भेल पागल
मोसिक घर सिरजल हम जतने
रोटिक नहि ओरिआन
सज्जन जन भेल फूटल छुतहर
दूर्जन मुख पकवान। हो भगवान......
फागुनमन भेल कातिक तनसन
टगहन हम नहि जाने
दुर्दिन करे अन्हड़ हम सेबल
मौसम करे दलान हो। भगवान........

सामाजिक अर्थाक चित्रण करैत प्रसिद्धनाटय निर्देषिक कुणाल कहैते छवि लौके बहुत दिन धरि बौक बनाक राखल नहि जा सकैत व्यवस्थाक प्रचारतय षित्रा पद्वतिक षड़र्यत्र दमन आ आर्तकक बातावरण अछैतो अन्याय अ असमानतका विरूद्व जन समान्यक असतोष आ आक्रोष मुखर में रहलैए जाककर मसिति में चैतनाक स्फूरल मे रहलेह आ सचेतन मन ते यथारिथिति के करवान स्वीकृत नही द सकैए।[5]

मिथिला समाजिक कुव्याव्स्था आ नारकीय जीवन प्रसंग लेख कलोकनि अनेक बरे प्रश्न उठबैत रहलाह अछि विभूति आन्नद लिखित एकांकी तितिरदाह में तितिदाहक माध्यम में सामाजिक नगन यर्थाक उदघटित कएल गेल अछि। तित्रित मुदा सुखक दिन वेसीकाल नै रिकै छे कोनो शरीर में जो धून ध लै छैत कोके क क छौड़ ओदु अभगली छौड़ीक विभाह होइेते सभकिछु बदलि गेलै जहिना कुमारी जीवन खेलाइत धुपादुत उमग उठाहम बितलै सिनु राएल जीवन ठीक तकर विपरीत कनैत अहुछिया करैत हाटकार करैत बीत लगलौ सासुर जाइत पुरहिया को भगवान बच्चा पर बच्चा देव लगभगथिन उन्युक्त छौक पांख लंच गेधक बीच फैसि गैल।[6]

देशक अन्ये भाग जकॉ मिथिलाक समाज सेहो स्त्रीक प्रति दोसर दर्जाक रीति रेखाज स्थति कयने रहल अछि सामाजिक रूपे एहि व्यवस्थाके भले संरक्षण भटैत रहले मुदा लेखकर अपना दायित्वक निर्वहरने कहिये पाछॉ नहि रहलाह अछि जतय समाज स्त्रीक समस्या के मापैत तौपैत रहल ओहहित लेख कौपकिन उदारती पूर्वक अपन जवाबदेही निमाहैत रहैत अछि । हरिमोन झा कथा कन्याक जीवन के नाट्यरूप प्रदान कालनि कमलनि विभूति आन्थ तितिरदाई एकाकी में कन्याक जीवन के रेखाकित करैत दयनीय स्थिति का चित्रण द्रष्य–

".... कि दिन कोसी रोग पसरलै आ ओइ अभगलीक सीमा घोआ गेलै राजकुमार सन घरवला अर्राक खसि पड़लै हाक्रेस मचि गैलै परोपहाब छौड़ी रौड़ भ गोलि । होनीपर की कफरो जूति चललैत डाकदर बैद अमला बदिया सभी मुहें तकैत रहि गेले तीन तीन चारि चारि बच्चक नान्हिटा माए दुखक पहाड़ तर दबैत पिचाइत चल गोलि। आ ई अकाल वृद्धा अबला नारी बौक गोलि घरक लेकक नजरि बदलि गेलै सूप महक भॉट जका गुड़क लागलि गुड़क लागलि गुड़कैत चलि गोलि नाटक प्रदर्षन कला थिक कथा कविता आ उपन्यास में स्त्री विमर्ष स्थापति करब आ नाटक एंकाकीक माध्यम में सामाजिक दषाक चित्रण करब दुनू दू तरहक प्लेट फार्म थिक जतह पोथी आ पत्रिका मैं पढ़ि सामाजिक यर्थास शिब्रितालेकनि परिचित होइत छथि ततहि नाटक माध्यमें अषिक्षितालोकनिक समस्यायॉ साक्षा त्कार होइत छनि एकता लेखक सामाजिक यथार्थक चित्रण माग नहि करैत छथि ओ समस्या के निदानक लेल पूर्ण चेष्टा से हो करैत छथि एहि हेतु समाज में सबल नारी पाग के आदर्षक प्रतिरूप ठाढ़ करैत छथि ओहहि पाग के सबल सिद्ध करबाबक लेक ओकर भाषा ओकर सोच इत्यादि के मजगुत करैत छथि

तिरि धाई एकाकीक ई संवाद देखल जाय।

सिलिर अएँ अहाँ पुरूख भ क कनै छी ?

हे श्री पाहुन अहाँ पुरूख भ क एन नै कानू तखन हम सभ कोना

धैरज धरबै थो? अहाँ सभ जकाँ जँ हमसभ आइ अपन अपन नोर बहाव लागी त गायक गाम दहा जाएत।[8]

स्त्री जीवन अनेक सुधारवादी कथा लोककथा मिथिला मे अदीकाल से प्रचलित रहल अछि मिथिलाक लोकनृत्य लोककथा आ कि लोकनाट्य सभ विधामे स्त्रीक स्वतंत्र विचार ओ स्वाभिमान दिग्दर्शित भेल अछि । मिथिला में प्रचालित पुरातन लोकनाटक जट जटिन के देखलापर स्त्री स्वरूपक साम्क्षात दिग्दर्शन होइत अछि लोकनाटक जट जटिन के नाटय रूप दैत विभूति आनन्दक एककी हाली हाली बरसू के ई प्रसंग ध्यान देख योग्य अछि प्रसंग छैक जखन जटिनक विवाह जटाक संग भ गेल छैक आब समय छौक द्विरागामन जटिनकब पिता विदाह सम्बन्धी प्रसतव जखन जटिकन समक्ष रखैत अछि तुखन प्रसंगक देखिक जटिनक स्वाभिमान अनुमान लगाओल जा सकैत अछि देखल जाए ई अंश।

"जटिनक बाप पहिदल लियोनमा हजमा एतौ गे बेटी बेटी गे ऐ बेरी लगानमा गौना करैतौ गे बेटी।

जटिन : हजमा के संगे हम नइ जेबै हो बाबा

ओ त बाटे घाटे लहछु करेतै हो बाबा।[9]

जटिन अपन पतिक अनुपस्थितम कोनो अन्य पुरूषक संग सासुर जायब नहीं स्वीकरैत अछि जटिनक द्वारा देल गेल वक्तव्यसं सामाजिक मर्यादा आ दायित्वबोधक अनुभव से हो होइत अछि आगाक प्रसंग देखल जाय–

"जटिन बाप दोसर लियोनमा बमना एतौ गे बेटी पंडित एतौ गे बेटी

बेटी गे ऐ बेरी लगनमा गौना करेतौ गे बेटी

जटिन बमनाके संगे हम नइ जेबे हो बाबा

ओ त बाटे–घाटे पोथिया उचारतै हो बाबा

ओ त केदुल वन में हमरा छोड़तै हो बाबा"।[10]

स्त्रीके ककरा संग कतहु जायब आयब सम्मानजनक अछि आ ककरा संग अना जयग निषेध तकरो स्वष्ट मलक हाली हाली बरसू एकाकी एहि ओरा देखल जा सकैए जटिन ऐ बेरी लगनमा गौना करेतौ गे जटिन जटिन भैसूर के संग हम नइ जेबौ गो अम्मा अम्मा गे भैसुर संगे छुतियो लगत गे अम्मा ओ त बाटे घाटे लठिया घुमेतै गे अम्मा।[11]

मिथिलामे सदैवस भैसूर परम्परागत रूपे अपन कौलिक परम्मपरा रक्षाक भार से हो ओही समुदायपर अछि जटिन के पति के संग सासुर जायब मर्यादाक निसय थिक अनय कौन पर पुरूषक सं गामन त्याज्य अछि एकर स्पष्ट बानगी एकाकी हाली हाली बरसू क एहि आंषमे अछि

जटिनक माए चारिम लियोनमा नवदोसी एतौ गे जटिन

जटिन गे ऐ बेरी लगनमा गौना करे तौ गे जटिन

जटिन ननदोसी के संगे हम नइ जेबौ गे अम्मा

ओ त बाटे घाटे कनखी चलेते गे अम्मा

अम्मा गे राहे बाटे हॅसियो लगेतै गे अम्मा. . . ."12

भारतीय साहित्यमें स्त्री विमर्षक परम्परमें मिथिला सभसं अग्रगव्य रहल अछि मिथिलाक प्रत्येक लोक कथा लोकगीत लोकगाथा आ कि लोकनाटक सभ साहित्य में नारी विमर्षक पुरान परम्परा रहल अछि। ते ने जटिन अपन स्वाभिमानक रयार्थ कोनो अन्य व्यक्ति संग सासुर जायब मना के दैत अछि जटिन अपन पातिक संग सासुर ल्याब लेल हसी खुषी तैयार अछि हाली हाली बरूस एकि में विभूति आन्द जटिनक एहि स्वीकृति के एहि तरहे व्याव्यागित कयने छथि जटा पॉचम लियोनमा अपने अएबों गे जटिन अपने अएगौ गे जटिन अपने अएबौ गे जटिन जटिन गे ऐ बेरी लगनमा हम नइ मानबौ गे जटिन

जटिन तोरा संगे हम हासि हासि जेबै रे जटा

जटा रे राहे बाटे फुसुर फुसुर बतिएबै रे जटा

तूँ तँ बाटे घाटे पनमा खिलेबे रे जटा

तूँ त राहे बाटे गोड़बा दबएबे रे जटा

जटा रे बाटे घाटे बेनियॉ डोल एबे रे जटा . . . ."[13]

आजुक समय संघर्ष प्रधान अछि एहि कालक सन्दर्भ में डा0 दिनेष कुमार झा के कथन छनि संघर्ष प्रधान आधुनिक वैज्ञानिक युगक यंत्र परियालित मानव विषाल से लुध दिस दिनानुदिन व्रवृत भेल जा रहल अछि युगक ई प्रवृति साहित्यके से हो र्प्याप्त प्रभावित कमयल अछि फलत

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

साहित्यश्रेख्म भावक सर्जक एवं चिन्तकोकनि नित्य नव नव विधाक जन्म द रहल छथि एकाकी से हो साहित्यक एकटा रहने नव किन्तु लोकप्रिय विधा आछि।जाही करणे आइ दीर्घ काय उपन्यासक स्थान पर एकाकी से हो लोकप्रिय गेल अछि।[14]

एकाकी नाटकक उत्कर्ष अंगेजी साहित्येमें अधिकांष पाओल जादूत अछिकितु ओकर अनुकरण जखन भारतीय साहित्य कार लोकनि से हो कथलनित ते ई ष्शीध हि लोकप्रियता द्वासिल क लेलक जेना कि अनेकांकी नाटक आ एकीकी नाटक में अन्तर नामहिस स्पष्ट अछि अनेकीकी नाटव अनक अंकमे रचित रहैत जखन कि एकांकी मात्र एक अंकमें एकंकीक विषेश्ता अछि जो ओ एकहि अनेक अंकक दृश्यता समेटने रहैत अछि अनेकांकी अथवा पूर्णाकी आ एकांकी दोसर प्रमुख अन्त ई होइत अछि जे अनेकांकी में कथाक सांगोपांग व्याख्या कएल लाइत अछि जखन कि एकोकी मे विषाल कथानकक कोनो एक अंगठ भिगित कएल जाइत अछि फलत एकांकी मे व्यंजनतात्ककता एवं प्रभाषीलता विषेष रूपे पाओल जाइत अछि अनेकांकी में अनेक पात्रक प्रयोग कएल जाइत अछि जखन कि एकांकी में पात्रक संख्या सीमित रहैत अछि एकर अतिरिक्त एकटा जे प्रमुख कारण अछि एकांकीक लोकप्रियताक अनेकीकी में घटनाक विस्तारक कारणे कथानकक गति मन्द रहैत अछि किन्तु एकांकी घटनाक न्यूनातक करणे कथानकक गति तीव्र रहैत अछि अनेकाकी मे जतय कौनतूहलक अनिष्चितता रहैत अछि औत हि एकांकी मे षुरुअतो कौतुहल बनम रहैत छैक तहिना अनेकाकी में संवादक जे स्वरूप होइत अछि एकांकी परिभाषित करैत डा0 दिनेश कुमार झा लिखने छथि एकांकी नाटय साहित्यक एकटा एहन स्वत पूर्ण विधा अछि जाहिमें कलेवष्क संश्रिवृता जीवन कोनो एक विषेष पझपरिस्थिति अथवा समस्या सम्बद्ध कथानकक एकाग्रता पागक अल्पता संवादक एकाग्रता गातंक श्रिवृता प्रभावक एकता आकर्षक एवं कौतूहलपर्ण प्रारम्भ द्वान्द्वात्मक एवं सतत जिज्ञासावर्द्धक विकास तथा चरम बिन्दुपर रसानुभूर्तिपूर्ण अन्त रहैत अछि।15ओनाता मैथिली साहित्यमें प्रचुर मागा में एकांकी गेल अछि मुदा एतय पौराणिक आ ऐतिहासिक एकांकीक चग्र नहिं क किछु समस्यामूलक एकांकी आ ओकर रचनाकारक चर्य करब आवष्यक अछि समस्यामूलक मैथिली रंगामचीय एकांकी समने समाजक विविध समसामाजियक एवं स्थानीय सख्या के एकांकी कार लोकनि अपना रचनाक विषय बनौने छथि ग्रामीण एवं नाकरीय जवीन अनेको सम्सयस सभके एकांकीकार लोकनि जे जोर खोख उठौली अछि ताहिने प्रमुख अछि वैवाहिक समस्या आर्थिक समस्या राजनीतिक समस्या परिववारिक समस्या आइद एहि कोटिक उल्लेखनीय एकांकी सभ अछि कुमार गंगानन्ध सिंह जीवन संधष सुधाषु ष्शेखर चौधरीक हथटुहा कुरसी प्रो0 हरिमोहन झाक वैजक दाम चन्द्रमान मिश्र अमर क ब्रहमस्थान डा0 ब्रजकिषोर वर्मा भणिपदन रचित मिथिलाक बेटी गोविन्द झाक मिथिलाक प्रतिनिधि डा0 प्रबोध नारायण सिंहक हाथीक दॉत डा0 रामदेव झाक मनुक्खक देवता दिगम्बर झाक टूटैतलोक भाग्य नारायण झाक पहली तारीख महेन्द्र मगंगियाक लेभराह अन्हारमं एकटाजोते आ डा0 दिनेश कुमार झाक गतिषील ई सभ एकांकी अपन विविध स्परूपने अनेको समस्याओं समाटने अछि समाजने स्त्री प्रति दोथम दर्जाक प्रदर्षन संग संग अनेक स्तरपर भ रहल दुर्व्यवहारकै सधन रूपस देखबालक प्रयास कएल गेल अछि। मैथिली एकांकी एवं अनेकांकी मं अनेको नाटककार स्त्री विमर्षक मजबूती से उठौलनि अछि एति तरहक नाटकार लेानियमें गोविन्द्र झा गुणनायक झा सुधाषु ष्शेखर चौधरी महेन्द्र मलंगिया अरविन्द्र अक्कू कुमार गगन कुमार ष्शैलेन्द्र कुणाल डा0 कमल मोहन चुभू काश्यप कमल ऋषि वष्ठिक सीताराम ष्शर्मा डा0 अविनाष चन्द्र मिश्र अभि प्रमुख छथि ग्लोबलाइजेश्यान के एहि युगमे यंसारक कोनो असायदा नस्तु एकहन नोह अछि जे हाथ में नहि होमए कहावतो प्रचिलि योगो अछि दुनिया अहसायु मुटटी में आब मैथिली नाटय साहिस्यम में लेहो एकसा एक प्रगितिषील नारी पागक गठन भेल अछि आन्द्र कुमार झाक नाटक मुक्ति क पाग बुआ जी के ई संवाद देख जाय बुआजी आरती अहा के सभ बात माली बुझाए देने हो एतीह हम चाहै छी महिला मण्डली महिलाक एकटा एहन समूह बनए जे ओकर सागीण विकासक संग सर्वाधिकार सम्बन्ध बनबैक चिन्तह करए ओकरा निर्णय भए जीवनक निर्वहन करैक उदेष्यम आधुनिकत जीवन यापक साधान सभ से परिचिति करबए ओ सभ निकृष्तास नीक अवस्थामें आवि पूर्ण स्वतंता स्वस्थात बोध करए इएह सभ परिकल्पनाक सनेसस ल स्मरा लोकनि भाग प्रारम्भ कएलह अछि जाहिमें अहा सभ सन नव विचारक धारणावाली प्रतिगवान ललनाके जोड़ि महिला मण्डलीक छवि प्रति बिम्नित होएत।[16]

आब महिलालोकनि अपन भविष्य निर्धारणक लेल योजना बद्ध रूप से सोचैत छथि अपना दम पर सामाजिक कुरीति के दूर करबाक योजना बनबै त छथि नारीलोकिन अपना सामर्थक पहचान करय लगकी अछि। मुक्ति यात्रा क ई संवाद द्रष्टव्य मालती दीदी अहॉ एहि संगठन से जुड़ब त हमारा सभ सन बएसवालीक लेल संजीवनी ओषधि भेटब सन होएता।[17]

जारी मे जेना लेना शिक्षाक प्रहार ग रहेल अछि ओ अपना चेतना के जागृत करैत जा रहलीह अछि नारी आधुनिक समाज में अपना दायित्व बोध आ कर्त्वयक उचित अवलोकन प्रस्तुत करैत कनिय मुक्तिय गंगा नाटकक एहिह आश ई प्रमाणित होइत अछि बुआजी देखू बेटी पतिक प्रमे जालाके केसी सामज कल्याणक मानसिक सर्जना करब कठिन छैक हम मानैत छी स्त्री के प्रणाति पातेन नव नव कारणाक कल्पना सृष्टिक निर्माण हो सम्भव अछि एहि पुरुष प्रधान समाजमें नारीक स्थान फूल जका अछि जकरा मौलाइते गाछ भूमिपर खसा दैत छैक।[18]

एवमुक मिथिला समालेम नारीक जे स्थान प्राप्त हो बाक चाहियानि तकरा लेले अपना भतरक चेतन तत्वके जागृत करब अति आवष्यक अछि नाटककार लोकिन एहि श्रेगमें आहमवान करैत छथि आन्नद कुमार झा मुक्ति यात्रा में लिखैत छथि। बुआजी है आरती फुरसति भेटलापर अएना में अपन मुह देख कोन अवस्थान में अछि अहाक नाक कान आ गरा माल मवेशी एतबहि फराक ले ओकरा समक नाम गराम डोरी प्रयोग अछि ते हमरा आहाक लेल सुत्र सुत्रर गहना की अहा पूर्व से चलि आबि रहल एहि अधलाह परिपाटी के वर्तमानों समागमें स्वीकारब जखन कि हमर तरूणी सभ फाइटर पायल बनि आसमानये तेजस आ सुखोई सन सुपरसोनिक युद्धक विभाग उड़ाबए लेल तैयार भए रहली अधि। तै एकटा आधुनिक तेजस्वी नारी सौन्दर्यक सामान बनि षतुक क्षणित है कि खुखक लेल अपना मूल्यवान दिन के नहि गामओत आरती महिला मण्डली के अहा सभ सन दीप्रिक आवष्यकता अछि जे भोति आहल दिषाहीना समजाके नव जागहरण से जगाए मुख धारा से जोड़ेक काल

ISSN: 2230-8938

Scanned with OKEN Scanner

करत।"

मयक बदलावक संक व्यक्तिक सोयक स्तर से हो बढ़ैत गेल अछि नारीक स्थिति में से हो पर्यापत सुधार देखल जा रहल अछि नारी आब स्वावलम्बी छथि हो आव विकसित भ रस्त छनि आ तकरा ओ तदनुरूप प्रकट करबाक से हो चेस्टाग रहैत छथि जाहि नारीक सन्दर्भ में महेन्द्र मलंगिया छुतहा घैल नाटक मे लिखैत छनि जे नारी कि समादिन जहो आ छाती देखबैत रहतीह ताही लिखैत छथि जे नारी कि सर्भदिन जाहो आ छाती देखबैत रहतीह ताही नारीक सषक्त रूप जखन आन्न्द कुमार नाटक मुक्ति न्यात्रा में अबैत अछि तै ओकर आत्मबल बढ़ि जाइत छैक ओ अपन एकटा नब स्वरूप गढ़बाक दिस डेगा बढ़बैत अछि ई अंष देखल जाय–

"आरती अहॉंक कहब इएह ने जे स्त्रीगण एहन उदण्डताक समामन करैत अप्रभावित होइक अभिनय करैत रहए ओर सभ दिन निर्माण बनि निर्वासन सहैत रहए नहि आब नहि आब जमाना बदलि गेल अछि स्त्री समाजके पोखरिक पानि जका बाहिन छेकिक नही राखल जा सकैत अछि।"[20]

मिथिलाक समाजमें स्त्री जखन जखन किछु क्रांतिकारी परिर्वतन लेल डेगा उठाबक प्रयास कायलनि ई समाज परिपाटी आ संस्कृति संडित होबाक नाम पर हुनका जिम्मेवार होयष्षक धमकी दैत रहल आ नारीलोकिन पुन अपना निर्णय से डिगैत रहली आब मुदा समय आ शिक्षा दुनू जखन स्त्रीक समक्ष आयल छनि तै औलेकनि अपन दायित्व आ कर्तव्य दुनुक निर्वहनक खिम्मा निमहाय चाहैत छनि आजुक नारीक स्वर बुलन्दय रहल अछि आधुनकि नारीक प्रतिनिधित्व करते ई नारी सोचके देखल जारा अवधेष देखू जमाना करतो किएक नहि बदलि जायत स्त्रीगण रहत अहालोकनिक सुरक्षा दृष्पि पूर्व से चलि अबैत परिपाटी सभपर विचारबाक चाहि।

"आरती : अहॉं कोन परिपाटीक बात करै छी ओ स्कूल कालेज बैंक बजार आयब जायब बन्द क दैक ओ अपन धंधा नहि सम्हारए हम पुछैत छी पति पत्नीक दैहिक सम्बन्धक अतिरिक्तों अपना अपना जीवन छैक कि नहि।"[21]

एहि तरहे मैथिली साहित्यमें जटिना पडा रचना में प्राम्य कालहिस नारी विमर्ष होआए उपन्यास होअए लधुकथा होअए अथवा एकांकी वा अनेकांकी नाटक नारीक उत्थानक बिना सामाजिक प्रगतिक कल्पना करब यथार्थक अलग अछि नारी सामाजिक उत्थानक प्रमुख स्तम्भा छथि मैथिलीक रचना करलोकनि अपना दायित्व निर्वहन उचित रूपे कथलिन अछि सृजेती लोकिन हरके विधामे स्त्रीक अधिकार रक्षा ओ सम्बत्रताक लेल प्रमुच प्रयास कयलनि अछि साहित्यके समाजक दर्पण कहल जाइत छैक ते जाहि कोनों रचनामे नारीक प्रडड़िता होयबाक वर्णक कएल गेल अछि ओहो सभ रचना सामाजिक यथार्थक देखेबाक प्रयास अछि रचनाकारलोकनिक उदेष्य ओहमे इएह छनि जे सामजमें स्त्रीक संग एहि रतहक भेदभाव जे मे रहल अछि से अहॉंक सोझा प्रकट होअए नारीक संग सामाजिक छल छदृम के उधार कएल जाय नारीक जीवन से हो स्वाबल्मबन आ स्ततंताक संग नाटक प्रदर्षनकारी विधा थिक नाटय ष्षास्त्र के पंचमबेद से हो गेल अछि नाटक एहन विधा अछि जाहि माध्यम से कोनो कथा गया है। जनताक सोझो दृष्यक रूपमें प्रस्तुत के ओर मन मास्तिकपर स्पट चित्र खिचल जा सकैत अछि नारी में जागृति आबि गेल अछि उचित के उचित आ अनुचित के अनुचित कहबाक समर्थनक विकासस से हो भ गेल अछि एहि तरहक सामाजिक परिवर्तमन रेखांकित करैत गहष बाषिष्ट सिया के सकल देखि नाटकमें एकटा शिक्षित युवती जानकीक माध्यम जे कहलानि अछि ताहि प्रसंग विचार करब आवश्यक अछि रामलीलाक दृष्य छैक सीता के अग्निपरीखाक सम्पूर्ण आयोजन भेल अछि रामलीलाक पाग राम रामलीलाक पात्र सीता के अग्नि मे प्रवेष क अपना पवित्रताक प्रमाण देबाक आदेष दैत छथि सीता अग्निकुण्डमें प्रवेष करबाक लेल उघत छथि पार्ष्व स्वर चलैत अछि

"कोरस : सीता अग्निमे करथि प्रवेष कियो नहि रोकय हुनका अनुचित राजाक देखि उदेस कियो नहि टोकय हुनका लहलद आगिक लहकय जीह लोक टोकैए अन का घर घर बेटी भेल लाचार कहत ओ जाक ककरा. . . .

जनकी: एकाएक मंचपर प्रवेश करैत आ सीताक बॉहि पकड़िक पाछॉ खिचैत रूकि जाउ पुरूषक आदेश पर स्त्री कहिया घरि अग्नि परीक्षा दैत रहत मैथिली की सीता के एखनो घरि बजबाक सामर्थ्य नाहि भेलनिहे है पुरुष षिरोमणभि त गेल राजा राम के राजगद्वी आब अपन भामट समतै जाउ ई बनौआ खिस्सा देखा देख स्त्री समाजेके कहिया धरि कैत रहब।[22]

पुरूष प्रधान समाज स्त्रीक एहि मुखरताके बर्दश्त नहि क पबैत अछि ते रामलीलाक रामक एहि प्रकारक प्रतिक्रिया अवैत अछि नाटकर ई अंश देखल जाय–

"राम स्त्रीके एतेक मुखकर नहि होयबाक चाही मैथिल ललन।

स्त्री–1 : है यौ एतेक मुखर नहि होयबाक चाही मैथिल ललन। रहलै से बुझि लिअ।

राम : अहॉं सभ एहि पुण्य यज्ञ में व्यर्थ बाधा नहि दी अहॉं जानकी (बिच्चे में बात कटैत) वाह वाह स्त्रीक अग्नि परीक्षाके अहॉं पुण्य यज्ञ कहैत छी राधव एहन घृणित कुकृत्य के कोना महिला मंडित करै जाइ छी अहॉं सभ।[23]

स्त्रीक सहनषीलताके ओकर कमजोरी मानि नारीके मर्यादष अनेक प्रकाए बन्हन में बन्हबाक भत्न कमलक ई समाज नारीक एहि मुखतरीपर रामक ई वाक्य एकर प्रमाण थिक।

"राम लज्जा आ धैर्य स्त्रीक आभूषण थिक देवी व्यर्थ वार्तालाप अनुचित अछि।

जनकी हम व्यर्थ नहि बजैत छी दे दषरथनन्दन होता युगसँ चुप्पहि त रहल छी आब करतेक दिन चुप्प रहब हे मर्यादा पुरूषोतम हमर मिथिला अपन बेटीक बेर बेर होइत अपनमानक कहिया धरि सहन करैत रहत व्यय करैत रामक जनम किएक भेल छल से मोना अछि ने?"[24]

ISSN: 2230-8938

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

मिथिलाक नारी मे शुरूबुतुक दृष्टि विकास भेल अछि आब नारीके समय पर बजनाक साहस सेहो बढल अछि नाटककार गदीप नषिट मिथिलाक ओ सकल देखि नाटकमें नारीक सामर्थ्य आ बुद्धिमताक परिचयत कहैत छथि जानकी राम जन्म भेल छल वर्नरता के खतम करनाक लेल तहकाकार करवाक लेल समाज विरोगो तत्वके समाप्त करवाक लेल अपनहि स्वीके भकसी झौकेलाक लेल नहि राम ई अग्नि परीक्षा राज लेल तहकाकार करवाक कोनो दोसर रंग देब उचित नहि राजके जनताके विश्वसपर सोलह आना ठढवाक चाही जानकी . एकरा निश्वासपर मर्म थिक बालिके एकरा कोनो दोसर रंग देब उचित नहि राधव जे राम षुरूआतें अयोजिजा सीताक संग विवाहसे काथनि ओ आगौ चलिक कोना मसिया गेलाहच25 ठव कहैत छी ई त विचलन थिक राघव जे राम षुरूआतें अयोजिजा सीताक संग विवाहसे काथनि ओ आगौ चलिक कोना मसिया गेलाह स्वीक बदलैत स्वरूपक जे चित्रण सिया के सकल देखि नाटकमें भेल अछि ताहिय स्वश्य होइत अछि जे नारी अपन अविसर आ सुरस्त्राक लेल आगमक भेल अछि मान अपमानक आत्मबोध जागृत संग विवाहक प्रसंग स्वस्टीकरण दैत कहलनि अछि राम अहाँ ठीक कहल जानकी ई विवाह ओ की सिद्ध कमलनि से जनैत छी।

जानकी हँ यौ ओ सिद्ध कमलनि जे सीता कोनो माइक कोसिहाँ नहि जानमलीह सीताक कोनो जाति धर्म नहि अछि।

राम दुहए मर्यादा स्थापित करब त मर्यादा थिक।

जानकी ई सभी मर्यादाक स्थापना करवयाला राम बादमे अपनहि किएक ओह

षक्तिक आगाँ आत्म समर्पण क देलानि जकरा मिरूद्ध ओ ऐतक दिन धरि लड़ैत रहलाह हाइ रे राजा राम।[26]

स्त्रीक लेल एहि तरहक समस्याक दिस ध्यान आकृष्ट कएल जाय तै देखवा में अवैत अछि जे ई सामाजिक समस्या राष्टीय समस्या बनि चुकल अछि मुदा स्थिति आब बदलि रहल अछि नाटककार कोन एहि विमर्षपर गम्भीरता प्रकट करैत रचना करैत रहलाह अछि सिया के सकल देखि नाटक मे नाटककार नहीं बषिट जानकी पात्रक माध्यमे कहैत छथि। जानकी हमरा असगर बुझबाक गलती जुनि करी हे कौषल्यानन्दन हम समस्त मिथिलाक आवाज छी आब दु चारि नाहि हमाजक हमार मैथिलानी अपन बेटीक मान मर्यादाक रजाक लेल आवाज उठौतीह समय बदलि गेल युग बदलि गेल छल आ आइयो गलत अछि बुधु ने एहनामें भक्त हनुमों अहाँक संग छथि।''[27]

मैथिलीक आधुनिक नाट्य रचनामे रचनाकारलोकनि भेल गलती दिस ध्यान आकृष्ट करबैत छथि भंदभाव दिस आँगुर देख बैत छथ सही क्रममे सिया के सकल देखि नाटकक जानकी कहैत अछि जानकी अहाँक इतिहास त पहिनसिसँ गलत अछि रधुनन्दन सोचू त रामके मर्यादा पुरूषोतम कहल जादूत छनि तिनक इएह कृत्य कोन इतिहासक गप्त करै छी अहाँ जे दषरथ पुत्र अपन कुल खानदानम मर्यादाके अपन महलमें नहि राखि सकलाह हुनका मर्यादा पुरूषेतमक संज्ञा के देलक?28''सिया के सकल देखि नाटक वर्णित स्त्री विमर्षपर अपन विचार व्यक्त करैत डा0 कमल मोहन चुन्नु कहैत छथि एहि नाटकमें स्त्री विमर्षक उत्कर्ष प्रस्तुत भेल अछि आजुक नारीकै अपन समस्याक लेल स्वयं लड़य पड़त जा धरि स्त्री समाज अपना अधिकार लेल स्वयं नहीं जागृत हएत सामाजिक अवधारणामें परिवर्तन हएत मुकिल अछि।''[29]

स्त्रीक सहनषीलताके ओकर कमजोरी मानि नारीके मर्यादष अनेक प्रकाए बन्हन में बन्हबाक भत्न कमलक ई समाज नारीक एहि मुखतरीपर रामक ई वाक्य एकर प्रमाण थिक।

''राम लज्जा आ धैर्य स्त्रीक आभूषण थिक देवी व्यर्थ वार्तालाप अनुचित अछि।

जनकी हम व्यर्थ नहि बजैत छी दे दषरथनन्दन होता युगसँ चुप्पहि त रहल छी आव करतेक दिन चुप्प रहब हे मर्यादा पुरूषोतम हमर मिथिला अपन बेटीक बेर बेर होइत अपनमानक कहिया धरि सहन करैत रहत व्यंय करैत रामक जनम किएक भेल छल से मोना अछि ने?''[24]

एहि नाटकक उत्कर्ष देखबा योग्य अछि। जखन नारी संघर्षक चरम प्रदर्थित होइत अछि सिया के सकल देखि नाटकक माध्यमे स्त्री समाजक मॉग ध्यातय अछि। जानकी स्त्रीक दर्दक ज्ञान पुरूषके कहियो ने भ सकैत हमरा सभ के नारी लेल फूट न्याय विचार चाही रूखनुक समय मे कही त हमरा सभकै अलग नयायालय अलग न्याय व्यवस्था चाही जतय स्त्रीक दर्द के दबाओल नहि जाएत ओकरा उचित आ समय पर निर्णय भेट तैक आब हमसय न्याक लेल कोनो राजा रामक बाट नहीं ताकत राघव । जे सीताक संग अन्याय करत तकरा सजाए भेटक चाही।''[31]

निष्कर्षत ई कहल जा सकैत अछि जे एकांकी अथवा नाट्य साहित्य में संक्षित कलेवर विषेष पत्र परिस्थिति समस्या एकाग्रता पागक माध् यमे जिज्ञासावर्द्धक विकास तथा चरम विन्दुपर रसनुभूति पूर्ण अन्त रहैत अछि। मैथिली साहित्ये एंकाकी अशवा नाटक परिमाणक मागा में कम रहलाक बावजूदो भारत अन्य भाषाक सकमहा ठाढ़ अछि मैथिली एकांकी एवं नाटक कष्य एवं शिल्पक दृषिट उत्कबर्षक स्थिति ते अछिए संगाहि स्त्री मिर्शक आधारपर तजबीज कएल जाय ई अपन चरम परिणति दिस अग्रसर अछि।

प्रदर्शन सूची–

1. मैथिली साहित्यक इतिहास नेपाल मैथिली नाट्क प्रदर्षन डा0 जयकान्त मिश्र तथा अन्य
2. मैथिली साहित्यक इतिहास नाटक वृदण डा0 जयकान्त मिश्र
3. अभिनय समक्ष संकेत विभति आन्नद पृ0 का
4. तत्रैव
6. भंगीमा कुणाल अगरत 1987

Scanned with OKEN Scanner

6. अभिनय तितिरदाई विभूति आनन्द पृ0 84
7. तत्रैव
8. तत्रैव पृ0110
9. अभिनय हाली हाली बरसू विभूति आवन्द पृ0 139
10. तत्रैव
11. तत्रैव
12. तत्रैव
13. तत्रैव
14. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास डा0 दिनेश कुमार झा पृ0 247
15. तत्रैव
16. मुक्तियात्रा आवन्द कुमार झा पृ0 23
17. तत्रैव
18. तत्रैव पृ031
19. तत्रैव पृ025
20. तत्रैव
21. सिया के सकल देखि प्रदषि वष्ठि पृ048
22. तत्रैव
23. सिया के सकल देखि गहषि वाषिठ पृ050
24. तत्रैव
25. तत्रैव
26. तत्रैव
27. तत्रैव
28. तत्रैव
29. मैथिल पुनर्जागरण प्रकाष सियाक बदजैत सकल डा0 कमल मोहन चुन्नु
30. सिया के सकल देखि ऋषि वाष्ठि पृ051
31. तत्रैव

Scanned with OKEN Scanner